

वार्तालाप—535, बैंगलोर—1 (कर्ना.), ता—15.3.08
Disc.CD No. 535, Dt. 15.3.08 Bangalore-1 (Karnatak)

जिज्ञासू —

बाबा — विष्णु बिना भुजाओं के कहा जावेगा? जो भुजाएँ हैं चार उन चार भुजाओं के मेल होने से विष्णु कहा जाता है। अगर चार भुजाओं में से एक भुजा खण्डित हो। तो खण्डित भुजा वाले विष्णु देवता की पूजा होती है क्या? क्यों नहीं पूजा होती? क्योंकि एक सहयोगी रूपी विष्णु की भुजा भी अगर खण्डित है। तो स्वभाव संस्कार से विष्णु स्वरूप का मेल नहीं कहा जावेगा। इसीलिए चारों आत्माएँ सम्पन्न स्टेज में होनी चाहिए। जो भुजा के रूप में कार्य करने वाली है।

Student:

Baba: Will Vishnu be said to exist without the arms? The combination of the four arms is called Vishnu. Even if one arm among the four arms is impaired, then, is a deity Vishnu with impaired arms worshipped? Why he is not worshipped? Because, even if one helper arm of Vishnu is impaired, then Vishnu will not be said to be a combination of nature and sanskars (of four souls). That is why all the four souls, which work as the arms should be in a perfect stage.

जिज्ञासू — तो पहले जो अष्टदेव हैं। एडवान्स पार्टी में वो पहले सम्पन्न बनेंगे?

बाबा — हाँ, हाँ।

जिज्ञासू — तो बाद में ब्रह्मा की सोल सम्पन्न बनेगी।

बाबा — अष्टदेव तो जन्म देने वाले हैं। उन अष्टदेवों में एक ही है गिना जाने वाला। जो सूर्यवंशी है। असल सूर्यवंशी और बाकी तो सब दूसरे-दूसरे वंश में, आखरी जन्म में गिर जाने वाले हैं। माया उनको हिलाए देती है।

Student: So, will the eight deities in the Advance Party attain perfection first of all?

Baba: Yes, yes.

Student: So, Brahma's soul will become perfect later on.

Baba: The eight deities are the ones, who give birth. Among those eight deities, only one is counted, who is a *Suryavanshi*. The true *Suryavanshi*. And all others go to other dynasties and experience downfall in the last birth. Maya shakes them.

समय — 01.36

जिज्ञासू — भक्तिमार्ग के अनुसार इस सृष्टि पर प्राकृतिक रूप से ढेर सारी यादगारें मिलती हैं। ये कैसी होगी और इसका कारण क्या है? मिसाल के रूप में राम-सेतु, कुरुक्षेत्र, हिमालय पहाड़, कैलाश पर्वत आदि।

Time: 01.36

Student: As per the path of worship, a lot of natural memorials are found in this world. How is this possible and what is the reason for it? For example, the Ram Setu (Adam's bridge), Kurukshetra, the Himalaya Mountains, the Mt. Kailash etc.

बाबा — हिमालय पहाड़ बनाया नहीं गया है। हिमालय पहाड़ तो बना बनाया है। ऐसे ही जो राम-सेतु बना हुआ है। वो बनाया नहीं गया वो तो ऑटोमैटिक बना बनाया हुआ है। ऐसे ही द्रौपदीकुंड बनाया नहीं गया। प्राकृतिक रूप से पहले ही वो कुंड बना हुआ था। ऐसे ही गोवर्धन पहाड़ बनाया नहीं गया। वो तो ऑटोमैटिक पहले से ही प्राकृतिक रूप से बना हुआ है। ऐसे ही जो देवआत्माएँ होती हैं, जब द्वापर में आती

हैं। तो द्वापर में वो पहले-पहले भित्ति चित्र तैयार करती हैं। पहाड़ों की गुफाएँ तैयार होती हैं। उन गुफाओं में मूर्तिकार, अच्छे-अच्छे चित्र तैयार करते हैं। और उन चित्रों में षास्त्रों की सारी भाव-भंगिमा भरी जाती है। माना ये प्राकृतिक रूप से बुद्धि ऐसी बनी हुई होती है। कि बुद्धि में वो ही वो ही बातें चलती हैं संगमयुग की। जो कि संगमयुग में उन्होंने पार्ट बजाया है।

Baba: Mount Himalaya has not been built. Himalaya is already existent. Similarly, the Ram Setu that exists has not been built. It was already existent naturally. Similarly, Draupadikund was not built. That *kund* (pit) was already existent in a natural form. Similarly, Mount Govardhan was not built. That is already naturally formed. Similarly, when the deity souls come to the Copper Age, then, in the Copper Age, they first of all prepare wall paintings. The caves are formed in the mountains. In those caves, the sculptors prepare nice pictures. And in those pictures all the emotions of the scriptures are expressed. It means that the intellect is naturally set in such a way that the topic of Confluence Age keep revolving in the intellect about the part which they have played in the Confluence Age.

पहले चित्र बनते हैं, चित्रों को देख-देख कर के फिर बाद में षास्त्र तैयार होते हैं। और षास्त्रों में भी उनके फिर इन्टरप्रेटेशन दिखाते रहते हैं। पहले ऋग्वेद, यजुर्वेद वगैरह वेद बनते हैं। फिर आरण्यक बनते हैं। फिर सतोप्रधान ब्राह्मण बनते हैं। फिर उपनिषद बनते हैं। फिर उनकी व्याख्याएँ पुराण बनते हैं। ऐसे करते-करते विस्तार होता जाता है। उन षास्त्रों की कथा-कहानियों के आधार पर फिर जहाँ-जहाँ जैसा बना हुआ देखते हैं, वो ही उसका नाम रख देते हैं। जैसे उन्होंने कम्पिला के पास कोई गहरा कुंड देखा। तो उसका नाम क्या रख दिया? द्रोपदीकुंड नाम रख दिया।

Initially pictures are prepared; later on scriptures are prepared by observing those pictures. And then they keep depicting their interpretations in the scriptures as well. Initially Vedas like Rigveda, Yajurveda are created. Then Aranyakas are created. Then the pure (*satopradhaan*) Brahmanas are created. Then Upanishads are created. Then their commentaries, i.e. the Puranas are created. In this manner an expansion takes place. On the basis of the stories mentioned in those scriptures, wherever and whatever (natural) structures people see, they name it. For example, they saw a deep pit near Kampila. So, what was the name that they gave it? They named it *Draupadikund* (the pit for holy fire from where Draupadi was born).

ऐसे ही लंका और भारत के बीच में उन्होंने देखा कि ये हिस्सा ऊँचा-ऊँचा है। पहले ऊँचा रहा होगा। बाद में समुद्र में, जैसे-जैसे दुनियाँ में गरमी बढ़ती गई, समुद्र का तल ऊँचा होता जाता है। तो वो हिस्सा दब गया। लेकिन जो नाविक हैं वो तो जानते हैं कि इस रास्ते से जाएँगे तो टकराते हुए जाएँगे। तो वो रास्ता छोड़ते गए। और उन्हें पता चल गया कि इस रास्ते में वो टकराने वाला हिस्सा पड़ता है। तो उन्होंने उसका नाम रख दिया राम-सेतु। बाद में राम-सेतु टूट गया बहुत वर्षों के बाद।

Similarly, they saw that this portion (of Earth) between Lanka and India is slightly elevated; earlier it must have been elevated. Later on, as the temperature of the world increased, the sea level increases and that (elevated) portion was submerged. But the sailors know that if we sail through this route then the ship will keep dashing (against the elevated portion of the seabed that got submerged). So, they abandoned that route. And they came to know that the obstructive portion lies in this route. So, they named it Ram Setu. Later on, after many years, that Ram Setu broke.

ऐसे ही हिमालय पहाड़। हिमालय पहाड़ प्राकृतिक रूप से पहले से ही बहुत ऊँचा बना हुआ है। और उसपर क्या जमा रहता है? बर्फ जमी रहती है। तो बेहद के अर्थ में उन्होंने हद का अर्थ लगाए दिया। सबसे बड़े ते बड़ा रूप है हिमवान, जो पार्वती का पिता है। वो बड़े ते बड़ा रूप है। और वो हिमवान की बुद्धि कैसी है? जैसे बर्फ जाम रहती है। ऐसी उसकी भी बुद्धि जामड़ी होती है। इसीलिए बैल का पार्ट दे दिया। बेहद की बातें उन्होंने हद में उठाए ली। बड़े ते बड़ी नदी हिन्दुस्तान की भारतवर्ष की है ब्रह्मपुत्रा नदी। और वो ऊँची ऊँची स्टेज में बहती है पहाड़ी इलाके में। लास्ट में आकरके जब गंगा उससे मिलती है तो वो सागर में मिल जाती है। तो जो नदी इस रूप में देखी कि बेहद ऊँचाई में बहती है। और लास्ट में जब ज्ञान गंगा उसमें आकरके मिलती है। तो सागर में मिल जाती है। ऐसी नदी की जो बनावट देखी उसका नाम उन्होंने ब्रह्मपुत्रा गंगा रख दिया।

Similar is the case of the Himalaya Mountains. Himalaya Mountains are already naturally very lofty. And what is it covered with? It remains covered by ice. So, they applied a limited sense to that which is in the unlimited sense. The biggest form is Himvaan, who is Parvati's father. He is the biggest form. And how is the intellect of that Himvaan? Just as ice remains frozen, his intellect too remains frozen. That is why he has been given the role of a bull. They have grasped a limited sense for that which is in an unlimited sense. The biggest river of India, of the Indian region is the river Brahmaputra. And it flows in a high stage, in the mountaneous region. At the end when (river) Ganga merges in it, it merges with the ocean. When the people saw a river in such a form that it flows in an unlimited high stage and at last when the Ganges of knowledge comes and merges with it, then it meets the ocean. When they saw such a formation of the river, they named it Brahmaputra and Ganga.

समय – 6.13

जिज्ञासू – बाबा, त्रेतायुग के रामों में दस, ग्यारह, बारह राम कौन-कौन हैं?

बाबा – जो नारायण बनते हैं वो ही राम बनते हैं। मुरली में बोला है जो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं वो ही राम-सीता बनते हैं। इस मुरली के महावाक्य के अनुसार जिस नम्बर के लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। उसी नम्बर के राम-सीता बनते हैं। अब लक्ष्मी-नारायण टोटल कितने हैं?

जिज्ञासू – आठ।

Time: 6.13.

Student: Baba, who is the tenth, eleventh and twelfth Ram among the Rams of the Silver Age?

Baba: Those who become Narayans become Rams. It has been said in the Murlis that the same souls who become Lakshmi-Narayan also become Ram-Sita. As per the version of this Murli, whoever becomes Lakshmi-Narayan of whatever serial number, they will become Ram-Sita of the same serial number. Well, how many Lakshmi-Narayans are there in total?

Student: Eight.

बाबा – आठ तो सतयुग के हैं और जो मुख्य संगम का ह, नर से नारायण, वो मिलाकरके नौ हो गए। तो नौ लक्ष्मी-नारायण और त्रेता में जाकरके नौ राम-सीता बनते हैं। वो राम-सीता और वो नौ लक्ष्मी-नारायण। वो सतयुगी स्थापना के हैं। सच्चाई है, फिर भी उनमें। सच्चाई से स्थापना होती है या झूठ से स्थापना होती है?

सच्चाई थोड़ी भी होगी तो स्थापना के निमित्त बनती है। और झूठ होगा तो झूठ क्या करेगा? झूठ, बिगाड़ेगा या बनाने वाला होगा? बिगाड़ने वाला होगा।

तो त्रेतायुग की जो तीन गदियां हैं बाद में। नौ के बाद कितनी बची? तीन। वो तीन गदियां ऐसी हैं जो निराकार बाप शिव जिस मुकर्रर रथ में आते हैं, उसका विरोध करने वाले हैं।

Baba: Eight (Narayans) belong to the Golden Age and the main one, who belongs to the Confluence Age (The one who gets transformed from) a man to Narayan. So, including him there are nine (Narayans in total). So, there are nine Lakshmi-Narayans and they become nine Ram-Sitas in the Silver Age. The Ram-Sitas and the nine Lakshmi-Narayans belong to the Golden Age establishment. Nevertheless they have truthfulness in them. The establishment takes place through truthfulness or does it take place through falsehood? Even if there is a little truth, it becomes instrumental in establishment. And if there is falsehood, then what will falsehood do? Will falsehood lead to destruction or will it bring about construction? It will lead to destruction. So, the last three thrones of the Silver Age; how many (generations) remained after nine? Three. Those three thrones are such that they oppose the appointed chariot, in which the incorporeal Father Shiv enters.

तीन बीजरूप आत्माएँ। हैं तो भाई-भाई। एडवॉन्स ज्ञान तो पहले-पहले लेते हैं। ब्रह्मा के बड़े ते बड़े चार पुत्र कहे जाते हैं। लेकिन तीनों भाई विधर्मियों के बीज बनते हैं। उनमें कुछ न कुछ सच्चाई कम रह जाती है। और झूठ का बीज जास्ती होता है। इसीलिए वो सीढ़ी के चित्र में ध्यान से देखें कि सीढ़ी के चित्र में त्रेता की अंतिम तीन सीढ़ियां कटी हुई दिखाई गई है। उसका क्या मतलब हुआ? खंडित सीढ़ियां है, खंडित राज्य है। विनाषकारी राज्य है। वहाँ भी विनाषकारी हैं। तो कलियुग के अंत में भी जो भगवान की बनाई हुई राजाई है, भगवान आकरके जो राजाई स्थापन करते हैं इस दुनियाँ में, जो सिर्फ सतयुग, त्रेता में ही नहीं चलती, द्वापर, कलियुग में भी देश-देशान्तर में कौनसा राज्य चलता है? राम राज्य, जिसे कहा जाता है। उसकी निषानी चलती है राजाओं का राज्य। अंतिम 100-150 वर्ष के अंदर जो तीन डीनैस्टी चलती है। वो सब खंडित डीनैस्टी होती है। वो राजाओं का राज्य टूट-टूट करके क्या बन जाता है? प्रजा के ऊपर प्रजा का राज्य हो जाता है। इसीलिए वो तीन राजाईयाँ त्रेता युग में जुड़ी हुई है। विधर्मियों के बीजों की। विनाषकारी हैं।

There are three seed-form souls. They are no doubt brothers. They obtain advanced knowledge first of all. They are called the four eldest sons of Brahma. But all the three brothers become the seeds of *vidharmis*. They lack truthfulness to some extent or the other. And the percentage of falsehood is more. That is why if you see the picture of the ladder carefully, the last three stairs of the Silver Age have been shown to be cut. What does it mean? These are impaired stairs; it is an impaired kingship. It is a destructive kingdom. Even there they are destructive. So, even at the end of the Iron Age, the kingship established by God, the kingship that God comes and establishes in this world, which does not continue just in the Golden Age and the Silver Age; which kingship continues even in the Copper Age and the Iron Age in all the countries? The one which is called the kingdom of Ram (Ram Rajya). Its indication is the rule of the kings. The three dynasties that rule in the last 100-150 years are all impaired dynasties. What does the kingship of those kings disintegrate into? It becomes a rule of subjects over subjects. That is why those three kingships are related to the Silver Age. They pertain to the seeds of the *vidharmis*. They are destructive.

समय — 10.05

जिज्ञासू – बाबा, यहाँ के ब्राह्मण बच्चे जो बीज बनते हैं वो सब नौ कुरियों में बाँटा गया है।

बाबा – क्या बनते है?

जिज्ञासू – बीज ।

बाबा – हाँ जी।

जिज्ञासू – बीजरूप के बच्चे। तो वो सब नौ कुरियों में बाँटे गए हैं। तो जब ब्राड ड्रामा शुरू होगी तब ये बीज सब सिर्फ अपने-अपने धर्म में ही जन्म लेंगे। या अन्य-अन्य धर्म में भी जावेंगे?

Time: 10.05

Student: Baba, the Brahmin children who become seeds here, have been divided into nine categories.

Baba: What do they become?

Student: Seeds.

Baba: Yes.

Student: The children of the seed-form. So, all of them have been divided into nine categories. So, when the broad drama begins, then will these seeds take birth in their own religions or will they go to other religions as well? 10.24

बाबा – बताया है ना षास्त्रों में कि नौ ऋषियों से नौ प्रकार के गोत्र बनते हैं। जैसे इब्राहीम, गौतम ऋषि कहा जाता है। तो जिसमें प्रवेश करता है वो तो आधारमूर्त नारायण है। लेकिन उसके शरीर को जो जन्म देने वाला है वो बीज है। वो बीज पहला-पहला बीज है, जिसमें पहला-पहला विधर्मी धर्मपिता प्रवेश करता है। उसके बाद फिर सात बीज और भी है। जिनमें दूसरे-दूसरे धर्मपिताएं जिनके जन्म देने वाले शरीरों में प्रवेश करते हैं। अर्थात् आधारमूर्त नारायणों में प्रवेश करते हैं। तो उन्हींके आधार पर ये अनेक प्रकार के धर्मों का हिसाब बन जाता है।

Baba: It has been said in the scriptures that nine kinds of gotras originate from nine sages. For example Abraham is called Sage Gautam. So, the one in whom it (i.e. the soul) enters is an *aadhaarmoorth* (base-like soul) Narayan. But the one who gives birth to his body is the seed. That seed is the first seed in whom the first *vidharmi* religious father enters. After that there are seven other seeds, in whom other religious fathers enter. They enter in the bodies that give birth, i.e. they enter *aadhaarmoorth* Narayans. So, on their basis the calculations of the various religions are made.

जिज्ञासू – तो सभी धर्म के बीज है ना।

बाबा – हाँ, इस्लाम धर्म का बीज है, बौद्धी धर्म का बीज है, क्रिष्चन धर्म का बीज है। फिर उनके सहयोगी बीज हैं। इस्लाम धर्म का (सहयोगी) बीज मुस्लीम धर्म । । जो मुस्लिम धर्म का मुहम्मद है वो भी किसी नारायण में ही प्रवेश करेगा ना।

जिज्ञासू – साढे चार लाख बच्चे है ना, बीज। वो बीज हर जन्म में उसी धर्म में जाते .

.....

Student: So, there are seeds of all the religions, are there not?

Baba: Yes, there are seeds of Islam religion, there are seeds of Buddhism, and there are seeds of Christianity. Then there are their helper seeds. The seed of the Muslim religion is (helper) the seed of the Muslim religion. (The soul of) Mohammad belonging to Muslim religion will enter only in (the CopperAge body of the soul of) a Narayan, won't he?

Student: There are four fifty thousand children, i.e. seeds, aren't there? Those seeds go to the same religion in every birth.....

बाबा – जो साढे चार लाख बच्चे हैं। उन साढे चार लाखों बीजों में भी कैटेगरीस हैं। कोई एक कैटेगरी के नहीं है। क्या? कोई सूर्यवंश के असल कैटेगरी के। कोई चंद्रवंशी कैटेगरी के हैं। कोई बौद्धी वंशीके कैटेगरी के हैं। तो जो बाप के वंश के असल कैटेगरी के हैं वो सदैव बाप के साथ रहते हैं। चंद्रवंशी कैटेगरी के होंगे तो चंद्रवंश में द्वापरयुग से अलग हो जावेंगे। इस्लाम वंश की कैटेगरी के होंगे तो इस्लाम धर्म में उनके अपने धर्म पिता को सहयोग देंगे। सूर्यवंश और चंद्रवंश को सहयोग नहीं देंगे।

जिज्ञासू – तो हर जन्म में वैसे ही उसी धर्म में जन्म लेते रहते हैं।

Baba: There are four and a half lakh children; there are categories among those four and a half lakh seeds as well. They do not belong to the same category. What? Some belong to the true category of the Sun Dynasty. Some belong to the category of the Moon Dynasty. Some belong to the category of Buddhist dynasty. So, those who belong to the true category of the Father's dynasty always remain with the Father. If they belong to the category of the Moon Dynasy, they will become separated from Copper Age onwards in the Moon Dynasty. If they belong to the category of Islam dynasty, then they will extend cooperation to their religious father (in the Islam religion). They will not cooperate with the Sun Dynasty and the Moon Dynasty.

Student: So, they keep taking birth in the same religion in every birth.

बाबा – वैसे ही परिवर्तन होता रहता है। माना यहाँ जो जिस धर्म से या जिस धर्म के बीज से या जिस धर्म के आधारमूर्त से प्रभावित हो जाते हैं। वो वहाँ भी जाकर उस धर्म से प्रभावित होते रहेंगे। मान लो चंद्रवंश का जो बीज होगा। और चंद्रवंश का जो बड़े ते बड़ा गुप है महान आत्माओं का कितने का है? बारह आत्माओं का। उन बारह आत्माओं का मुखिया कौन? जगतअम्बा। तो जगतअम्बा जो है वो चंद्रवंश का बीज हुआ या किसी दूसरे धर्म का बीज हुआ? चंद्रवंश का बीज हुआ। अब संगमयुग में चंद्रवंश का बीज सूर्यवंश के बीजों से कट होकर के अलग गुप बनाता है। तो द्वैतवाद पैदा हो गया या नहीं हो गया?

Baba: Similarly transformation keeps taking place. It means that whoever is influenced by whichever religion or by the seed of whichever religion or by the root-like soul of whichever religion here, he will go and keep on becoming influenced by the same religion even there. Suppose there is a seed of the Moon Dynasty. And what is the strength (i.e. number) of the biggest group of the great souls of the Moon Dynsty? Twelve souls. Who is the head of those twelve souls? Jagadamba. So, is Jagadamba a seed of the Moon Dynasty or a seed of some other religion? She is a seed of the Moon Dynasty. Now, in the Confluence Age, the seed of the Moon Dynasty gets cut-off from the seeds of the Sun Dynasty and makes it's separate group. So, was dualism created or not?

द्वैतवाद माना द्वितीय। द्वैतवाद किससे पैदा होता है? दिति से। और अद्वैतवाद अदिति से माना खन्दन न करे। बाप की बातों को जो भी खन्दन करे वो सब विधर्मी हो जाते हैं। चंद्रवंश तब तक विधर्मी नहीं होता। जब तक ज्ञान सूर्य का सहयोग करता है। सहयोगी है तो खन्दन करने वाला नहीं है। और द्वापरयुग से वो भी खन्दन करने वाला बन जाता है। किसका सहयोग करेगा? जो सब धर्मों की माँ है, जब इस्लामी धर्म पुरु होगा तो किसको सहयोग देगा? इस्लाम धर्म को सहयोग देगा। तो वहीं से खन्दन हो जाता है।

Dualism (*dwaitwaad*) means dual. How does dualism originate? From Diti. And monoism (*adwaitwaad*) originates from Aditi, i.e. the one who does not oppose. All those who oppose the versions of the Father are *vidharmis*. The Moon Dynasty does not become *vidharmi* until it extends cooperation to the Sun of knowledge. If it extends cooperation, it does not violate. And from the Copper Age, it also starts condemning. To whom will it extend cooperation? The one who is the mother of all the religions, when the Islam religion begins, whom will she cooperate with? She will cooperate with Islam religion. So, the impairment begins from there itself.

समय – 14.54

जिज्ञासू – बाबा, आज के मुरली में बाबा ने जगदम्बा को सर्चलाइट देने के लिए बोला।

बाबा – हाँ जी। आवाहन करने के लिए नहीं बोला है। क्या कहा?

जिज्ञासू – सर्चलाइट देने के लिए।

बाबा – हाँ, आवाहन करने का मतलब ये है कि बाप के नजदीक आ जाए। बाप की बातों को माने ऐसे नहीं कि सीधे आकर हमको पढ़ाई पढ़ाने लग जाए। हमारी पालना करने लग जाए।

Time: 14.54

Student: Baba, in today's Murli Baba has asked us to give searchlight to the world mother.

Baba: Yes. It has not been said to summon her. What was said?

Student: To give search light.

Baba: Yes, to summon means that she should come close to the Father. She should accept the versions of the Father. It is not as if she should directly come and start teaching us or start sustaining us.

जिज्ञासू – माना वहीं रहकर परिवर्तन हो जाए।

बाबा– वहाँ रहके परिवर्तन हो जाए या नजदीक आकर परिवर्तन हो जाए माना सहयोगी बने। विपरीत योगी, वियोगी न बने।

जिज्ञासू – तो विजयमाला को आवाहन करना।

बाबा– विजयमाला को आवाहन करना है। वो तो सदैव योगी है। मनसा से पहले भी योगी, अभी भी योगी, तन से बंधन में है। वो भी ज्ञान न होने के कारण। जब कान अच्छी तरह से कोई पकड़ लेगा तो बकरी किसके कन्ट्रोल में आ जावेगी? पकड़ने वाले के कन्ट्रोल में आ जावेगी।

Student: It means that she should be transformed while being there.

Baba: She should be transformed while living there or by coming close. It means that she should become a helper (*sahyogi*). She should not have an opposite yog or she should not remain disconnected.

Student: So, we have to summon the *vijaymala* (rosary of victory).

Baba: Yes, you have to summon the *vijaymala*; they are always yogi. They were yogi through their mind earlier too. And even now they are a yogi; (but) they are in bondage through the body, that too because of lack of knowledge. When someone catches hold of the ears nicely, then under whose control will the goat be? It will come under the control of the one who catches (its ear).

जिज्ञासू – तो 76 में पकड़ लिया था ना?

बाबा— नहीं ये कैसे कह सकते हैं? आपको क्या सपना आया या साक्षात्कार हुआ?

जिज्ञासू – बाबा लक्ष्मी-नारायण का राज्य आ जाएगा, ऐसा कहा है।

बाबा— हाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य हो जावेगा। माना ये थोड़े ही कहा कि लक्ष्मी-नारायण विष्णु बन जावेंगे। राज्य आ जावेगा माना मंसा की बात है या प्रैक्टिकल बात है?

जिज्ञासू – प्रैक्टिकल में तो उसके मन में भी तो आना चाहिए ना।

बाबा – आप बताईए। वो मंसा की बात है या प्रैक्टिकल बात है।

जिज्ञासू – मंसा की बात है।

Student: So, the ears were caught in 1976, weren't they ?

Baba: No, how can you say like this? Did you have a dream or did you have a vision?

Student: Baba, it has been said that the kingdom of Lakshmi-Narayan will begin.

Baba: Yes, the kingdom of Lakshmi-Narayan will begin. It was not said that Lakshmi Narayan will become Vishnu. "The kingdom will come", means, is it a matter of the mind or is it a practical thing?

Student: It should have occurred practically in her mind as well , shouldn't it?

Baba: You tell us. Is it a matter of mind or is it a practical thing.

Student: It is a matter of the mind.

बाबा – मंसा की बात है। मंसा की बात माना उस माता के कन्ट्रोल में जो होंगे, संसर्ग संपर्क में आने वाली आत्माएँ। वो उसकी बात मानने वाली होंगी। वो इन्तजार कर रही होंगी कि ये जब निकलेगी तो हम भी...। हम दूसरी तरफ नहीं जाने वाले हैं। हम इसके साथ रहेंगे। इनको ही फॉलो करेंगे। नारायण भी हमारे सामने आ जाए तो हम मानने वाले नहीं हैं। इस रूप में लक्ष्मी नारायण का राज्य स्थापन हो गया। मंसा के आधार पर। बौद्धिक रीति से।

Baba: It is a matter of the mind. It is a matter of the mind, means that those who will be under the control of that mother, the souls who will come in contact with her will accept her versions. They might be waiting that when she emerges then we will also....We are not going to switch over to the other side. We will remain with her. We will follow her. Even if Narayan comes in front of us we will not accept him. In this way, the kingdom of Lakshmi-Narayan was established, on the basis of mind, intellectually.

समय – 17.11

जिज्ञासू – बाबा, माताजी कह रही है कि जो सूर्यवंशी होते हैं ना तो वो संगमयुग में लक्ष्मी-नारायण के अन्दर में ही रहेंगे संगमयुग में।

बाबा – जो सूर्यवंश के पक्के होंगे। लक्ष्मी नारायण के अन्दर में रहेंगे। ठीक है। लक्ष्मी-नारायण के भी अन्दर में कहेंगे।

जिज्ञासू – लेकिन, बाबा जब सतयुग षुरु होता है , ब्रह्मा-सरस्वती और दूसरे धर्म का जो रूल षुरु होता है ना।

बाबा – सतयुग जब षुरु होता है तो दूसरे धर्म कहाँ से आ गए?

जिज्ञासू – नहीं सतयुग जब षुरु होता है ना। जैसे कुमारिका दादी है और बौद्धी धर्म वाले हैं।

बाबा – वो तो रहते ही नहीं तो दूसरे धर्म कहाँ रहते हैं?

जिज्ञासू – नहीं बाबा, वो लोग बैठते हैं ना।

Time: 17.11

Student: Baba, mataji is saying that those who are *Suryavanshis* will remain only under the control of Lakshmi-Narayan in the Confluence Age.

Baba: It is about those who remain steadfast in the Sun dynasty. They will remain under (the control of) Lakshmi-Narayan. It is alright. It can also be said that they will remain under (the control of) Lakshmi-Narayan.

Student: But Baba when the Golden Age begins, then the rule of Brahma Saraswati and of (the souls belonging to) other religions begins, doesn't it?

Baba: When the Golden Age begins, where did other religions come from?

Student: No, when the Golden Age begins. For example, there is Kumarka Dadi and the one belonging to the Buddhist religion.

Baba: They do not exist at all. So, how will the other religions exist?

Student: No, Baba, those people sit, don't they?

बाबा – सतयुग आदि जब होता है तो सिर्फ सूर्यवंशियों का राज्य होता है।

जिज्ञासू – लेकिन सेकेन्ड नारायण जो होता है ना।

बाबा – तो गिरती कला की बात करो न। चौथाई जब गिरती कला हो जाती है सतयुग में।

जिज्ञासू – हाँ, तब सूर्यवंशी आत्माओं का क्या पार्ट होगा?

बाबा – तब सूर्यवंशी आत्माएँ नीचे उतरती जावेंगी। हर जन्म में ऊँचे ही बने रहेंगे क्या?

जिज्ञासू – नहीं बाबा, सूर्यवंशी आत्माएँ भी उनके कन्ट्रोल में आ जाएंगी?

Baba: When the Golden Age begins, there is a rule of just the *Suryavanshis*.

Student: But the one who is the second Narayan.

Baba: So, talk about the decreasing celestial degrees, when the celestial degrees decrease by 1/4th part in the Golden Age.

Student: Yes, then what will be the part of the *Suryavanshi* souls?

Baba: Then the *Suryavanshi* souls will keep descending. Will they remain high in every birth?

Student: No, Baba, will the *Suryavanshi* souls also come under their control?

बाबा – सूर्यवंशी आत्माएँ उनके कन्ट्रोल में नहीं आ जावेंगी। उनके बड़े-बड़े राज्य अधिकारी बनकरके रहेंगे। आखिरी जन्म में प्रजा वर्ग में चली जावेगी वो आत्माएँ। त्रेता के पहले जन्म में राम राजा जो था सतयुग में वो क्या बन जावेगा? राम प्रजा और प्रजा भी कैसी? बच्चे तुम्हारा बाप आया हुआ है। क्या? प्रजा भी ऐसी वैसी नहीं होगी। प्रजा भी जो प्रजा वर्ग के साहुकार होंगे फर्स्ट क्लास, उन सबके ऊँची स्टेज में रहने वाले होंगे।

Baba: *Suryavanshi* souls will not come under their control. They will remain as their big officers. Those souls will become a part of the subjects in the last birth. In the first birth of the Silver Age, what will King Ram, who existed in the Golden Age, become? Ram becomes *praja* (subject) and what kind of a subject does he become? Children! your father has come. What? Even as subjects they will not be ordinary ones. They will be the ones who live in a stage higher than all the first class prosperous subjects.

जिज्ञासू – सेकेन्ड नारायण के अन्डर में रहना पड़ेगा ना राज्य अधिकारी बनेंगे तो भी?

बाबा – अन्डर में रहा कि अन्डर में कर लिया?

जिज्ञासू – नहीं राम का बात नहीं है।

बाबा – और किसकी?

जिज्ञासू – वो पौने सोला कला राजा बन जाता है ना। सेकेन्ड नारायण। तब जो राज्य अधिकारी बनते हैं सूर्यवंशी। तो वा राजा के अन्दर में रहना पड़ता है ना।

Student: Even if they become officers, they will have to live under the control of the second Narayan, won't they?

Baba: Did he remain under him or did he take him under his control?

Student: No, it is not the matter of Ram.

Baba: Then who else is it about?

Student: The second Narayan becomes perfect in $15 \frac{3}{4}$ celestial degrees, doesn't he ? Then the *Suryavanshis* who become the officers have to live under the king, don't they?

बाबा – और क्या हर जन्म में कोई महाराजा बनकर रह सकता है क्या? ये तो बेइन्साफी हो गई। फिर तो कोई कहेगा कि हमें नहीं जन्म लेना, राजयोग सीखना। अरे राजयोग सीखने से फायदा क्या जब हर जन्म में हमको आधीन होकर रहना है? कोई फायदा हुआ? जो पहले जन्म में ऊँचा वो फिर एक युग में नीचे उतरता जावेगा। ब्रह्मा-सरस्वती की आत्मा राधा-कृष्ण बनकर लक्ष्मी-नारायण बनेगी। वो भी अगले जन्म में क्या होगा? नीचे गिरते जावेंगे। सदा एक सा समय किसी का सुना और नहीं देखा है। ऐसे हो सकता है क्या कि हर आत्मा एक ही स्टेज में बनी रहे।

Baba: If not, can anyone become Maharaja in every birth? It is injustice. Then anyone will say, 'I don't want to take birth or learn Rajyog. Arey, what is the use of learning Rajyog when we have to live as subordinates in every birth? Is there any benefit?' The one who is elevated in one birth will go on experiencing downfall in the rest of the Age. The soul of Brahma and Saraswati will become Radha Krishna and then Lakshmi Narayan. What will even they experience in the next birth? They will go on experiencing downfall. We have neither heard nor seen anyone being in the same stage all the time. Can it be possible that every soul remains in the same stage?

जिज्ञासू – माना पौने 16 कला सम्पूर्ण जो आत्माएँ रहेंगी....

बाबा – कलाएँ तो सबकी गिरेंगी।

जिज्ञासू – तो उस समय ये जो सूर्यवंशी पहले के आत्माएँ, पहले जन्म के आत्माएँ हैं।

बाबा – उनकी भी कलाएँ गिरेंगी।

जिज्ञासू – सोलह कला सम्पूर्ण उनका वो पौना 16 कला से और थोड़ा कम हो जाएगी परसेन्टेज में।

बाबा – सबकी कलाएँ गिरेंगी। एक जैसी कलाएँ ही गिरेंगी लेकिन पद में अंतर होगा। यहाँ भी तो ऐसे ही होता है। जो अभी-अभी ज्ञान में आ रहे हैं वो सतोप्रधान होंगे या जो पुराने ज्ञान में चल रहे हैं वो उनसे ज्यादा सतोप्रधान होंगे? जो अभी-अभी आ रहे हैं। सतोप्रधान होते हैं। यहाँ ज्ञान में उतरते हैं और वहाँ परमधाम से उतरते हैं। शूटिंग तो होती है ना।

Student: It means that the souls which remain perfect in $15 \frac{3}{4}$ celestial degrees.....

Baba: The celestial degrees of everyone will decrease.

Student: So, at that time these initial souls belonging to the Sun Dynasty, the souls of the first birth....

Baba: Their celestial degrees will also decrease.

Student: The celestial degrees of those who are perfect in 16 celestial degrees will decrease a little more than those who are $15\frac{3}{4}$ celestial degrees.

Baba: The celestial degrees of everyone will decrease. Everybody's celestial degrees will decrease equally, but there will be a difference in the post. Even here it takes place similarly. Will those who are entering the path of knowledge now, be pure or will those who have been following the knowledge for a long time be more pure? Those who are entering now are pure. Here they enter the path of knowledge and there they descend from the soul world. The shooting takes place here, doesn't it?

समय – 20.41

जिज्ञासू – कश्मीर देश में सूरज नहीं आना बाबा। रोषनी नहीं आता।

बाबा— वहाँ सूरज उगता नहीं है? ये किसने कह दिया आपसे कि कश्मीर में सूरज नहीं उगता? कहाँ सुना, मुरली में सुना, किसी व्यक्ति से सुना या टी.वी. में देखा?

जिज्ञासू – व्यक्ति ने।

बाबा – किसी व्यक्ति ने बोला? तो सुनी सुनाई बातों पर विश्वास ही नहीं करना। अखबारों पर भी विश्वास नहीं करना। अखबारों में भी आजकल पैसे लेकर बहुत झूठ बोलते हैं।

Time: 20.41

Student: Baba, the Sun does not rise in Kashmir; there is no light.

Baba: Doesn't the Sun rise there? Who told you that the Sun does not rise in Kashmir? Where did you hear that, did you hear it in a Murli or from some person or did you see that on TV?

Student: A person.

Baba: Did some person tell you so? So, don't believe hearsay at all. Do not believe even the newspapers. Even in the newspapers, nowadays they keep publishing a lot of false information by taking money.

समय – 21.28

जिज्ञासू – बाबा, जो अकाले मौत में शरीर छोड़ते हैं वो महापापियों के लिस्ट में आ गए ना। सूक्ष्म शरीर धारण करना पड़ता है। जो सरेन्डर होकरके शरीर छोड़ते हैं वो सूर्यवंशी नहीं है क्या?

बाबा – सूर्यवंशी कैसे हो गए सारे? सरेन्डर होने वाले जो हैं बेसिक नॉलेज में या एडवान्स नॉलेज में? सरेन्डर कौनसे सरेन्डर की बात कर रहे हैं?

जिज्ञासू – एडवान्स में।

बाबा – एडवान्स में अलग-अलग धर्मों के बीज नहीं हैं?

जिज्ञासू – हैं।

बाबा – तो फिर वो शरीर छोड़ेंगे तो अंतर नहीं पड़ेगा। (iska arth Baba say pooch lejiye)

Time: 21.28

Student: Baba, those who leave their bodies through because of untimely death are were included in the list of the most sinful ones (*mahaapaapi*), are were (kyon change kiya hai?) they not? They have to take up a subtle body. Aren't (negative should be in the beginning, it is better that way.) those, who leave their bodies after surrendering, not *Suryavanshis*?

Baba: How can everyone be *Suryavanshi*? Are you talking about those who surrender in the basic knowledge or in the advanced knowledge? Which surrendered (group) are you talking about?

Student: (The one) in the advanced (knowledge).

Baba: Aren't there no the seeds of different religions within the advance (party)?

Student: They do exist There are.

Baba: Then it will not make a difference if they leave their body.

जिज्ञासू – माना जो शरीर छोड़ते हैं वो सूर्यवंशी नहीं है?

बाबा – अरे! जो सूर्यवंशी बीज होंगे और जो इस्लाम धर्म वंशी बीज होंगे। और जो नीचे ते नीचे वंश वाले बीज होंगे। उनमें अंतर नहीं होगा? पाप कर्म करने में अंतर होगा या नहीं होगा? होगा।

जिज्ञासू – माना सूर्यवंशी भी सूक्ष्म शरीर धारण करते हैं क्या?

बाबा – जो असल सूर्यवंशी पक्के हैं वो इतने खराब कर्म करते ही नहीं है। जो सूक्ष्म शरीर धारण करना पड़े। उनकी निषानी होगी कि वो निर्बंधन होंगे आखरी जन्म में।

जिज्ञासू – माना पक्का सूर्यवंशी माना पच्चीस हजार है?

बाबा – वो तो प्रजा वर्ग हो गई। प्रजा वर्ग पच्चीस हजार होता है। कितना होता है? लाखों की तादाद में होते हैं प्रजा वर्ग में। राजाएँ तो बहुत थोड़े होते हैं।

Student: Does it mean that those who leave their bodies are not *Suryavanshis*?

Baba: Arey! Will there not be any difference between the *Suryavanshi* seeds and the seeds of the Islam dynasty and the seeds of the lowermost dynasty? Will there be a difference between the sins committed by them or not? There will be.

Student: Does it mean that the *Suryavanshis* also take up subtle body?

Baba: Those who are true *Suryavanshis* do not perform such bad actions at all that they have to take up a subtle body. Their indication will be that they will be free from bondages in the last birth.

Student: Does it mean that there are twenty five thousand (steadfast) *pakka Suryavanshis*?

Baba: They are the subjects. Twenty five thousand are included among the subjects. How many are included among them? The subjects are numbering in lakhs. The kings are very few.

समय – 23.18

जिज्ञासू – बाबा, हनुमान को दीवार पर चिपका हुआ क्यों दिखाते हैं?

बाबा – हाँ, उनकी जब तक पूँछड़ी है तब तक विघ्नों के दीवार पर चिपके रहते हैं। या तो सड़को पर उनकी मूर्ति खड़ी कर दी जाती है। आन्ध्रा में ज्यादातर सड़को पर खड़े रहते हैं। जब आन्ध्रा के चक्कर लगाए होंगे ना हनुमानजी ने। तो सड़कों पे डोलते हुए होंगे। सड़कों या रेल की पटरी पर।

Time: 23.18

Student: Baba, why is (figure/idol of) Hanuman shown to be stuck to the wall?

Baba: Yes, until he has a tail, he remains stuck to the wall of obstacles. Or else his idol is installed on the roadsides. In Andhra (Pradesh) His idols are mostly installed on the roadsides in Aandhra. When Hanumanji must have toured Andhra, he must have roamed on the roads. or On the roads or on the railtracks.

समय – 23.50

जिज्ञासू – गली-गली में गीतापाठशाला खुलेगा बोलते हैं वो कब खुलेगा?

बाबा – गली-गली में तब खुलेगा जब चारों तरफ गली-गली में आवाज़ फैल जाएगा।

जिज्ञासू – वो कब पहुंचेगा?

बाबा – अरे! आवाज़ पहुंचने का टाइम नहीं मालूम? बाप की प्रत्यक्षता कब होगी पता नहीं चला? बाप और बच्चे की प्रत्यक्षता कब होगी?

जिज्ञासू – 2018 में प्रत्यक्षता होगी।

बाबा – 2018 में प्रत्यक्षता होगी। तो गली-गली में गीतापाठशाला होगी।

जिज्ञासू – 2018 में होगा। अभी नहीं होगा।

बाबा – हाँ जी।

Time: 23.50

Student: It is said that Gitapathshalas will be opened in every lane. When will they open?

Baba: They will open in every lane when the sound (of revelation) will spread everywhere, in every lane.

Student: When will it reach (every lane)?

Baba: Arey! Don't you know the time when the sound will reach (everywhere)? Did you not come to know when the Father will be revealed? When will the revelation of the Father and the son take place?

Student: The revelation will take place in 2018.

Baba: The revelation will take place in 2018. Then there will be Gitapathshalas in every lane.

Student: It will take place in 2018. It will not take place now.

Baba: Yes.

समय – 24.23

जिज्ञासू – बाबा, पुरुषोत्तम मास, पुरुषोत्तम दिन, पुरुषोत्तम घड़ी है ना। तो 2018 में हो सकता है क्या?

बाबा – बिल्कुल होगा।

जिज्ञासू – माना जब बाप की प्रत्यक्षता होती है। जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बटवारा हुआ ना। तब स्वर्ग का सैम्पल हुआ ना। तो वो तीन सौ – चार सौ माता है जो वो भाग गई ना।

बाबा – हाँ।

Time: 24.23

Student: Baba, there is 'purushottam month', 'purushottam day', 'purushottam moment'. So, can it happen in 2018?

Baba: It will certainly take place then.

Student: It means when the revelation of the Father takes place. When India was divided/partitioned into India and Pakistan, then a sample of heaven was prepared, wasn't it? So, those three-four hundred mothers ran away, didn't they?

Baba: Yes.

जिज्ञासू – तो ऐसे ही अभी आदि सो अंत होना चाहिए।

बाबा – वो चार सौ ही भाग गई।

जिज्ञासू – माना अभी 16108 भागते हैं ना।

बाबा – हाँ तो फिर 16108 भागंती आनी चाहिए ना अखबारों में।

जिज्ञासू – माना जो 2018 के पहले हो जाता है। भागने का काम।

बाबा— माना क्या सोच रहे हैं तब ही भागने का काम करना है। घुमतारा भिड़ाय रहे हैं कि हम कब भागें। आप पूछना क्या चाहते हैं?

Student: So, similarly, whatever has taken place in the beginning should take place now in the end.

Baba: Only those four hundred ran away (from their homes).

Student: It means that 16108 will run away (from their homes) now, won't they?

Baba: Yes, then the news of 16108 having run away (from their homes) should appear in the newspapers, shouldn't it?

Student: It means that the task of running away (from homes) takes place before 2018.

Baba: Does it mean you are thinking that the task of running away (from homes) is to be performed only at that time? Are you calculating/guessing as to when you should run away? What do you want to ask?

जिज्ञासू – आदि में सब कन्याओं माताओं को बंधन आया ना। सात-सात ताला लगाके रखा उनको। बाद में उनको ऐसा एक मौका मिला वो भाग गए ना। ऐसे ही अभी 2018 के अंदर भागेगी क्या 16108?

बाबा – कोई बंधन होने की ऐसी स्टेज आवेगी या नहीं आवेगी? जब आदि में आई थी ब्राह्मणों की दुनियाँ में तो अंत में ऐसी स्टेज नहीं आवेगी?

जिज्ञासू – आवेगी। लेकिन 2018 के अंदर ही आवेगा ना?

बाबा – माना 2018 के बाद।

जिज्ञासू – माना अंदर।

बाबा – अरे! 2018 के बाद तो प्रत्यक्षता हो जानी है।

जिज्ञासू – उसके अंदर हो जाता है ना ये काम।

Student: In the beginning all the virgins and the mothers faced bondages, didn't they? They were kept under upto seven locks. Later on they got such a chance that they ran away (from their homes), didn't they? Similarly, will 16108 run away (from their homes) now before 2018?

Baba: Will such a stage of having bondages come or not? When such a stage (of bondages) had come in the begining in the world of Brahmins, will such a stage not come in the end?

Student: It will come. But it will come before 2018 only, will it not?

Baba: Do you mean to say 'after 2018'?

Student: I mean to say 'within/before' (2018).

Baba: Arey! Revelation is to take place / would have taken place after 2018.

Student: This task (of running away from homes) completes before that period.

बाबा – और क्या? माना हिसाब लगा रहे हैं कब होना चाहिए कब नहीं होना चाहिए। ऐसा नहीं है "काल करे सो आज कर, आज कर सो अब। पल में परलय होत है फिर करेगो कब"। जो अच्छा काम करना है वो तुरन्त कर देना चाहिए। अपना संकल्प ही अपने को फेल कर देता है। कोई कार्य की सिद्धि करनी हो तो उसमें अपना संकल्प काम करता है या किसी और का संकल्प या वाचा करती है? अपना संकल्प ही अपने को फेल या पास करता है।

Baba: What else? It means that you are making calculations that when should it take place and when should it not take place. It is not as if 'Do today whatever you have to do tomorrow. And do it now whatever you have to do today. The destruction can take place in a second; after that, when will you do it?' Whatever noble act you have to perform should be performed immediately. Our own thought brings about our failure. If success is to be

achieved in any task, then is it our own thought that enables the task or is it anybody else's thought or word that enables the task? Our own thought makes ourself to fail or pass.

समय – 26.43

जिज्ञासू – बाबा, ये माता पूछती है कि 16108 में सरेन्डर कन्याएँ ही आएंगी क्या कि माताएँ भी आएंगी?

बाबा – क्या माताएँ सरेन्डर नहीं हो रही हैं? और जो कन्याएँ हैं क्या वो पक्का है उनके माथे पर लिखा हुआ है कि वो कन्याएँ ही है या पहले से माताएँ हैं या नहीं है?

जिज्ञासू – कन्या तो कन्या ही होंगे।

Time: 26.43

Student: Baba, this mother is asking whether only the virgins (kanyas) who are surrendered will be included among 16108 or will the mothers also be included?

Baba: Are mothers not surrendering? And is it certain about the virgins, is it written on their foreheads that they are virgins or whether they are already mothers or not?

Student: The virgins will only be virgins.

बाबा – कन्याएँ कन्याएँ ही होंगे? आज की दुनियाँ ऐसी है? मुरली में तो बोलते हैं कोई को मामा खराब कर देता, कोई को चाचा खराब कर देता, कोई को पापा खराब कर देता। तो कन्या रही या माता हो गई। कोई कन्याएँ भी है और कोई माताएँ भी है। ये भी नहीं कह सकते कि माताओं की संख्या कम है। नहीं। माताओं की संख्या भी है। माताएँ ज्यादा होती हैं या कम होती है? इस ज्ञान में माताएँ ज्यादा होती हैं या कन्याएँ ज्यादा होती है या कुमार ज्यादा होते हैं या अधरकुमार ज्यादा होते हैं? माताओं की संख्या ज्यादा होती है। तो एडवॉन्स में भी माताओं की संख्या ज्यादा है। कोई उंगली उठाकर नहीं कह सकता कि ये कन्या है या माता है। ये किसी को कहने का अधिकार नहीं है।

Baba: Will the kanyas only be virgins. Is today's world like this? It is said in the Murlis that someone is spoiled by Mama (maternal uncle), someone is spoiled by Chacha (paternal uncle), someone is spoiled by the father. So, does she remain a virgin or did she become a mother? There are some virgins as well as some mothers. Moreover, it cannot be said that the number of mothers is less (in the rosary). No. The number of mothers is also good. Is the number of mothers more or is it less (than virgins)? In this knowledge, is the number of mothers more or is the number of virgins more or is the number of kumars more or is the number of adharkumars more? The number of mothers is more. So, even in the advance (party) the number of mothers is more. Nobody can raise a finger that this one is a virgin or a mother. Nobody has a right to say this.

समय – 27.55

जिज्ञासू – बाबा, अभी जो नॉन सरेन्डर माताएँ बाबा के साथ टूर जा रही है। वो एन. एस. में आना जाना कर रही है क्या?

बाबा – नॉन सरेन्डर माताएँ और सरेन्डर माताएँ। वो सरंडर कागज पर लिखने से कोई सरेन्डर हो जाता है क्या? कागज पर लिख दिया और बात कोई भी नहीं मानता है। सब अपोजिषन में काम करता, अपोजिषन में बातें करता, तो उसको सरेन्डर कहेंगे या नॉन सरेन्डर कहेंगे? वो तो नॉन सरेन्डर होता तो अच्छा था। बाबा कहते हैं ऐसे तो मुए भले सो बढ़िया, मर गए होते तो अच्छा होता। बाबा परेषान हो जाते हैं ऐसे धमककड़ मचाने वालों से।

Time: 27.55

Student: Baba, are the non-surrendered mothers who are going with Baba on tour visiting the NS?

Baba: Non-surrendered mothers and surrendered mothers. Does someone become surrendered just by giving this in writing? If someone writes on paper and does not obey any direction. She performs all the actions in opposition, talks in opposition; so, will she be called surrendered or non-surrendered? It would have been better if she had been non-surrendered. Baba says, it would have been better if such ones were dead; it would have been better if they had died. Baba is fed-up of such ones who create disturbances.

जिज्ञासू – तो फिर बाबा वो नॉन-सरेन्डर और सरेन्डर में क्या अंतर है?

बाबा – नम्बरवार है ना। अब्बल नम्बर सौ परसेन्ट सरेन्डर कौन होगी पहले?

जिज्ञासू – माया।

बाबा – अगर वो पहले सरेन्डर न हो तो वो सर्वषक्तवान के लिस्ट में कैसे आ जाएगी ? हाँ? आ जाएगी? नहीं आएगी।

जिज्ञासू – माना अभी सरेन्डर नहीं हुआ तो भी एन. एस. में आना जाना करते हैं क्या?

बाबा – जो लास्ट में सरेन्डर होंगे और फास्ट में श्रीमत पर चलकर दिखाएँगे तो अब्बल नम्बर सरेन्डर के लिस्ट में नहीं आ जाएँगे? आ जाएँगे।

Student: So, then Baba, what is the difference between non-surrendered and surrendered?

Baba: They are numberwise, aren't they? Who will be the number one hundred percent surrendered, ahead of everyone else?

Student: Maya.

Baba: If she does not surrender first, then how can she be included in the list of almighty? Speak up? Will she be included? She will not be.

Student: Does it mean that someone can visit NS even if she is not surrendered now?

Baba: Those who will surrender in the last (period) and will set an example by following the shrimat fast, will they not be included in the list of the number one surrendered ones? They will.

जिज्ञासू – माना बाबा अभी एन.एस. की बात कर रहे हैं ना?

बाबा – एन.एस हो या कहीं एस. हो। बात सरेन्डर की हो रही है। एन.एस में डाईरेक्ट सरेन्डर करने वाले तो कोई जाते ही नहीं। और जो चले जाते हैं वो तो समझो बहुत भाग्यवान है। अभी-अभी सरेन्डर हुए। अभी-अभी चले जाए। और। (is baarey may Baba say pooch leejiye ki voh kiski baat kar rahey hain, kya kanyaon ko surrender karney NS may aaney valey mata-pita ki ya fir NS may surrender honay vaali kanya-mataon ki?)

Student: Baba, does it mean that you are talking about NS now, aren't you not?

Baba: Whether it is NS or any S. The matter being discussed is of becoming 'surrendered'. Those who surrender (their daughters) do not go directly to the NS at all. And those who go (there directly) can be considered to be very fortunate. Just now they surrendered and just now they go (there). Anything else?

समय – 29.42

जिज्ञासू – बाबा, ज्ञान सुनने के साथ-साथ याद भी हो सकती है क्या? माना जब हम मुरली सुनते हैं, देखते हैं क्या उस समय याद नहीं होगी?

बाबा – मुरली सुनने के लिए कहा है कि कोई काम नहीं करना चाहिए उस समय। सिवाय मुरली सुनने के। क्या? कोई स्वेटर बुनता रहे। वो नहीं चलता है। माने कोई स्वेटर भी बुनता रहे और मुरली भी सुनता रहे इसका मतलब उसकी बुद्धि में उतना निष्चय नहीं बैठा है कि ईश्वरीय वाणी क्या चीज़ होती है। इश्वरीय वाणी सुनते समय कोई काम नहीं करना। हाँ, याद करते समय कोई काम करते रहें तो कोई बाधा नहीं। ये तो प्रैक्टिस डालनी है। याद करते हुए कर्म करना है। लेकिन बाबा की मुरली सुनते समय कोई कर्म नहीं करना चाहिए।

Time: 29.42

Student: Baba, is remembrance possible while listening to knowledge? I mean to say, when we listen to Murli or watch Murli, can't we be in remembrance at that time?

Baba: As regards listening to Murli it has been said that you should not do any work at that time except listening to Murli. What? Someone may keep knitting a sweater. That will not work. It means that if someone knits a sweater as well as listens to Murli then it means that his intellect has not developed faith to that extent as to what Godly versions are. You should not do any work while listening to Godly versions. Yes, it does not matter if you perform some task while remembering (Baba). You should practice this. You should/can perform actions while remembering (Baba). But you should not perform any action while listening to Baba's Murli.

समय – 30.54

जिज्ञासू – बाबा, एक पावरफुल संगठन तैयार होने पर एक दूसरे को खींच करके 108 की माला तैयार हो जायेगा। तो पावरफुल संगठन 12 सूर्यवंशियों को कहते हैं ना, पहले-पहले 8 का बनता है।

बाबा – आठ इकट्ठे नहीं बन सकते। आठ भी इकट्ठे तब कहें जाए जबकि विनाशकारी भी उसमें शामिल हो जाए। स्थापना, पालना प्रत्यक्ष हो सकती है जब तक पुरानी दुनियाँ विनाश न हो? स्थापना करने वाले मणके और पालना करने वाले मणके इकट्ठे हो जाएँ और जो पापाचारी दुनियाँ है उसका विनाश न हो जो गंदे वाइब्रेशन फैलाने वाली ह। तो आठ की अवस्था बन जाएगी ? नहीं बनेगी। इसीलिए वो चार का काम भी सम्पन्न होना चाहिए। कौनसे चार? जो नष्ट देव विनाशकारी हैं। जो सारे विरोध करने वाले, सूर्यवंशियों के दुनियाँ में है, चाहे वो चंद्रवंशी हो, इस्लामवंशी हो, बौद्धीवंशी हो, क्रिश्चनवंशी हो या सूर्यवंशियों के अंदर प्रजा वर्ग वाले भी क्यों न हो। अगर विरोध करने वाले हैं (तो) वो सब अनिष्चय बुद्धि बन जाएँ। ऐसा वन्डरफुल पार्ट बजाएँ, वो चार।

Time: 30.54

Student: Baba, if one powerful gathering gets ready, it will pull each other and the rosary of 108 will be ready. So, the 12 suryavanshis are said to be that powerful gathering, aren't they? First of all the gathering of the eight is made.

Baba: The eight cannot become (united) at the same time. Even the eight will be said to be united when the destructive ones also are included (in that gathering). Can the establishment and the sustenance be revealed until the old world has not been destroyed? If the beads that cause establishment and the beads that cause sustenance come together, and if the sinful world that spreads dirty vibrations is not destroyed, will those eight achieve their stage? They will not. That is why the task of those four (destructive beads) should also be accomplished. Which four? The deities of destruction (nashtdev) who cause destruction All those who are opponents (of the father) and are in the world of the Suryavanshis, whether they are the Chandravanshis, whether they are the Islamvanshis, whether they are Baudhivanshis, whether

they are Christianvanshis or whether they are the ones who are included among the subjects among the *Suryavanshis*.... If they are opponents then all of them lose faith. Those four play such a wonderful part.

जिज्ञासू – माना 12 का संगठन अभी नहीं बना है।

बाबा– संगठन तो तब ही कहा जाएगा 12 का जबकि स्थापनाकारी, विनाषकारी और कल्याणकारी माना पालना करने वाले तीनों ही मिलकरके एक हो जाएँ।

जिज्ञासू – अभी नहीं हुआ है क्या?

बाबा– ब्रह्मा का गुप ब्रह्मसमाजी तैयार हो गए। विष्णु का गुप वैष्णव सम्प्रदाय पालना करने वाले तैयार हो गए; लेकिन शंकरजी के फॉलोवरस् तैयार नहीं हुए। और वो मिक्स नहीं हुए। तो नई दुनियाँ बन जावेगी? बिल्कुल नहीं बन सकती।

जिज्ञासू – एक मुरली में बताया कि विनाष अभी तक क्यों रुका हुआ है। विनाषकारी तो अभी तैयार हुआ है लेकिन स्थापना करने वालों के लिए रुका हुआ है। बताया है।

Student: It means that the gathering of 12 is not yet ready.

Baba: It will be said to be a gathering of 12 only when those who cause establishment, destruction and benefit, i.e. sustenance come together.

Student: Has it not happened now?

Baba: Brahma's group, i.e. Brahmasamaji became ready. Vishnu's group, i.e. the Vaishnav community, who cause sustenance, became ready. But the followers of Shankarji have not become ready. And they have not mixed (with the other two). So, will the new world be established? It cannot be established at all.

Student: It has been said in a Murlī as to why destruction has not taken place so far. Those who cause destruction are ready, but it is waiting for those who cause establishment. It has been said so.

बाबा – हाँ, इसीलिए तो रुका हुआ है कि स्थापना करने वाले, जैसी स्थापना करना चाहिए वैसे नहीं किया। उनके अंदर जो भावना है, शुभ भावना और शुभकामना है, वो विनाषकारियों के प्रति उतनी अच्छी नहीं बनी है। जो विनाषकारी, परिवार के चार हैं भले छोटे भाई हैं, नष्टदेव हैं, लेकिन हैं कहाँ के? हैं तो परिवार के है ना। नियम तो पहले से बना हुआ है कि उनको भी कार्य करना है। भल टट्टी साफ करने का काम करना है। मुर्दे उठाने का काम करना है; लेकिन वो काम हुए बगैर परिवार का काम पूरा हो जाएगा? दुनियाँ बन जावेगी? दुनियाँ में चाण्डाल नहीं चाहिए? सफाई करने वाले नहीं चाहिए क्या? चाहिए तो। उनको भी साथ लेकरके चलना है। ये नहीं कि जैसे हरिजनों से लोग करते हैं नीची जाति वालों के प्रति ऊँची जाति वाले करते हैं। अरे! छी-छी-छी दूर रहो, दूर रहो। ये शुभ भावना, शुभ कामना की निषानी है?

Baba: Yes, it is pending because those who bring about the establishment did not bring about the desired establishment. They did not develop that much good wishes and good feelings towards the destructive ones. The four destructive ones from the family (of *Suryavanshis*), although they are the younger siblings, although they are the deities of destruction, but to whom do they belong? They belong to the family, don't they? A rule already exists that they too have to perform their task. Although they have to perform the task of cleaning the shit, they have to perform the task of lifting the corpses, but can the task of the family be accomplished without that task being accomplished? Can the (new) world be established? Are Chandaals (cremators) not required in the world? Are scavengers not required? They are definitely required. So, they should also be taken along. It is not like the treatment given to

the Harijans, to the people belonging to the lower castes by the people from the upper castes. Arey, dirty, dirty, dirty, go away, keep a distance. Is this an indication of good wishes and good feelings?

जिज्ञासू – लेकिन वो तो यहाँ भगवान की बनी बनाई घर गृहस्थ को तोड़ लेते हैं।

बाबा – आदि में भी तोड़ा था। 76 में भी तोड़ा था। और लास्ट में भी तोड़ेंगे।

जिज्ञासू – सीढ़ी में जो तीन कटी हुई सीढ़ी दिखाई है वो उनका ही.....

बाबा – हाँ तो वो अपनी ही राजाई चट्ट करेंगे। इसमें दूसरों का क्या बिगड़ता है?

जिज्ञासू – माना दिखाते है ना बाबा। तो जब ब्रॉड ड्रामा में द्वापर युग में प्रजापिता और उनकी जो गुप है 12 सूर्यवंशियों का। राज्य स्थापन करने के लिए साथ ले जाते हैं। तो जब राज्य स्थापन करते हैं। नष्टदेव जो है वहाँ भी विनाष करने का काम करेंगे ना।

Student: But they break the already built household of God here.

Baba: They had broken in the beginning as well. They had broken in 1976 and they will break in the end as well.

Student: The three partially cut stairs that have been shown in the ladder is their (memorial).....

Baba: Yes, so, they will spoil their own kingship. What has anyone else got to lose in this?

Student: Baba, I mean to say that they show, don't they? So, when Prajapita and his group of 12 *Suryavanshis* go to establish the kingship in the broad drama in the Copper Age, so when they establish the kingdom, then the deities of destruction will perform the task of destruction even there, won't they ?

बाबा – स्थापना करने के समय स्थापना करेंगे कि नष्ट करेंगे। सन् 76 में जो तीन थे विनाषकारी। उन्होंने स्थापना की थी या विनाष कर दिया था?

जिज्ञासू – स्थापना की थी थोड़ा समय के लिए। बाद में वो स्थापन होने के बाद नष्ट भी वो ही करते हैं?

बाबा – लास्ट में टाइम आवेगा.....। मान लो जैसे इस्लाम धर्म वंश के हैं तो बाबर के टाइम पर तो वो सहयोगी ही बनेंगे। मोहम्मद षाह रंगीला का राज्य जब आएगा तो वो क्या बनेंगे? वो विनाषकारी बन जाएंगे।

जिज्ञासू – माना वहाँ भी विनाष करने के लिए वही निमित्त बनते है।
(बाबा ने इषारे किया क्यों नहीं।)

Baba: Will they establish at the time of establishment or will they destroy? The three destructive ones who existed in 1976; did they bring about the establishment or did they bring about the destruction?

Student: They had caused establishment for some time. Later on, after the establishment, do they themselves cause destruction as well?

Baba: A time will come in the end...suppose, for example, those who belong to the Islam dynasty, they will certainly help Babar in his time. When the kingship of Mohammad Shah Rangeela begins, then what will they become? They will become destructive.

Student: It means that they become instruments in causing destruction there as well.
(Baba said 'why not' through gestures)

जिज्ञासू – वो अभी संगमयुग में जो बाप को अधूरा प्रत्यक्ष किया थोड़े समय के लिए। माना अंत में वो अभी संगठन नहीं बनायेंगे? माना नष्ट करने का काम ही करेंगे? और कुछ सेवा नहीं करेंगे।

बाबा – जब फर्स्ट क्लास रह जाएगा, आठ ही आठ रह गए और बाकी सब विरोधी खलास हो गए, विरोधी सब खलास हो गए और जो सहयोगी थे आदि में, वो ही सहयोगी फिर रह गए। तो 12 ही तो बचेंगे और कौन बचेंगे? आदि वाले अंत में बचेंगे कि नहीं बचेंगे? चलो विनाशकारी ही सही लेकिन थे तो राम के भाई। इसीलिए दिल्ली वालों का बहुत भाग्य है। दिल्ली वालों के लिए कहा है दिल्ली ने स्थापना के कार्य में आदि में बीज डाला है। मौके पर। तो अंत तक सहयोग लेने के अधिकारी हैं।

Student: They revealed the Father partially for some time now in the Confluence Age. Does it mean that they will not prepare the gathering in the end? Does it mean they will perform only the task of destruction? They will not do any other service.

Baba: When the first class remains, only the eight will survive and all other opponents will perish, all the opponents perish and those who were helpers in the beginning, the same helpers remain again. So, only the 12 will survive; who else will survive? Will those, who were in the beginning, survive or not? OK, they may be destructive, but they were brothers of Ram. That is why those from Delhi are very fortunate. For those from Delhi it has been said that Delhi has sown the seed in the task of establishment in the beginning, at the right moment. So, they are entitled to receive cooperation (of the Father) till the end.

जिज्ञासू – माना वो सात्विक स्टेज में थोड़ा-बहुत संगठन बनायेंगे?

बाबा – वो क्या संगठन बनायेंगे संगठन तो बना हुआ है तैयार हो जाएगा; लेकिन जो कचड़ा है उसको साफ कर देंगे। महाकाली का काम है कचड़ा साफ करना। और लक्ष्मी का काम है पालना करना।

Student: Does it mean that they will prepare a little bit of gathering in the pure stage?

Baba: What kind of a gathering will they make? The gathering already exists, it will become ready, but they will clean the garbage. Mahakali's task is to clean the garbage. And the task of Lakshmi is to give sustenance.

समय – 36.41

जिज्ञासू – बाबा मुरली सुनते समय क्यों नहीं दूसरा काम करना चाहिए?

बाबा – अच्छा? माना बाबा की जो वाणी है उससे प्यार नहीं है? मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार नहीं है ?

जिज्ञासू – है।

बाबा – जब मुरलीधर से प्यार है तो मुरलीधर से ही प्यार करना चाहिए कि काम महाषुत्रु से प्यार करना है?

जिज्ञासू – कानों से सुनते रहते हैं ना।

बाबा – कान सुनते रहते हैं। कान किसकी वाणी सुनते हैं?

जिज्ञासू – बाबा की।

बाबा – और आँख से किसको देखते हैं?

जिज्ञासू – बाबा को।

बाबा – तो फिर?

Time: 36.41

Student: Baba, why should we not do any other work while listening to Murli?

Baba: OK Don't you have love for Baba's versions (*vani*). Don't you have love for the murli therefore the Murlidhar(the one who plays the murli i.e. narrates the versions)? /

Student: There is.

Baba: When there is love for the *Murlidhar*, then should one love only the *Murlidhar*, or should one love the biggest enemy, i.e.lust?

Student: We keep listening through the ears, don't we?

Baba: The ears keep listening. The ears listen to whose *vani*?

Student: Baba's *vani*.

Baba: And whom do the eyes see?

Student: Baba.

Baba: So, then?

जिज्ञासू – मन-बुद्धि से भी देख सकते हैं ना। काम करते समय।

बाबा – मन-बुद्धि से भी देखें और जो वाचा है, वो भी अंदर-अंदर उसीके सिमरण में लगाएँ। दूसरे काम में क्यों लगाएँ? अगर व्यभिचारी ज्ञान होगा....। स्वेटर बुन रहे हैं। बुद्धि बुनने में जाएगी कि नहीं?

जिज्ञासू – जाएगी।

Student: We can also see through the mind and intellect while working, can't we?

Baba: We should see through the mind and intellect as well and we should also use speech for His remembrance from within. Why should we use it in any other task? If the knowledge is adulterous (*vyabhichaari*)....If we are knitting a sweater, will the intellect divert towards knitting or not?

बाबा – तो बुद्धियोग व्यभिचारी हुआ या अव्यभिचारी हुआ? व्यभिचारी हो गया। अगर व्यभिचारी ज्ञान सुना तो उसका रिजल्ट क्या होगा? व्यभिचारी रिजल्ट होगा।

जिज्ञासू – बाबा, खाना बनाते है ना उस टाइम?

बाबा – वो तो याद की बात हो गई।

जिज्ञासू – नहीं, वहाँ सी.डी डालकर रखते हैं और खाना बनाते रहते हैं।

बाबा – वो बात हो ही नहीं सकती। एक तो पहले बात ये है कि सन्मुख वाणी नहीं है वो। जो सन्मुख वाणी चलती है। उसमें तो विशेष ध्यान रखना है कि हम बाबा की जिस समय वाणी सुन रहे हैं उस समय कोई भी दूसरा कार्य न करे।

Baba: So, did the connection of the intellect become adulterous or pure? It became adulterous. If we listen to adulterous knowledge, then what will be its result? The result will be adulterous.

Student: Baba, what about when we cook?

Baba: That is a matter of remembrance.

Student: No, we play the CD there and keep cooking.

Baba: That cannot be possible at all. The first thing is that it is not a face to face *Vani*. In the face to face versions that are narrated, one should pay special attention that when we are listening to Baba's *vani*, we should not perform any other task.

समय – 38.04

जिज्ञासू – वी.सी.डी में बताया कि जो अष्टदेव परमात्मा के जितना नजदीक रहते हैं उतना जगतअम्बा भी नहीं रहते वैष्णवी भी नहीं रहते बोला है। लेकिन ये भी बाबा बताया है कि जो वैष्णवी जो है वो जन्म-जन्म षम्भू को ही वरण करती हैं।

बाबा – ठीक है। जन्म-जन्म वरण करती है तो क्या 84 जन्म वरण करती है क्या? अरे 84 जन्म वरण करती है? नहीं। बाकी जो अष्टदेव हैं वो तो कोई भी संबंध में हो तो भी साथ किसके रहेंगे? बाप के साथ रहने वाले हैं।

Time: 38.04

Student:It was said in a VCD that neither the world mother nor Vaishnavi remain as close to the Supreme Soul as the eight deities. But Baba it was also told that (the soul of) Vaishnavi marries Shambhu (another name for Shankar) in every birth.

Baba: It is alright. She marries in every birth; so does she marry for 84 births? Arey! does she marry him in the 84 births? No. As regards the eight deities, in whatever way they may be related (to the Father), with whom will they live? They will live with the Father.

जिज्ञासू – माना वैष्णवी भी जन्म जन्मांतर एक के साथ नहीं रहेगी?

बाबा – वो तो संबंध की बात है। पति-पत्नी के संबंध में जिसमें ज्यादा चेप लगता है। संग का रंग जिसमें जास्ती असर करता है। उस संबंध की बात बताई। और वो संबंध हर जन्म में नहीं होता।

जिज्ञासू – दूसरे सम्बंध में भी नजदीक रहेगी ना? अगर नहीं बनेगी तो।

बाबा – सन्यासी बनेगी। वरऊ षम्भु न तो रहूँ कुआँरी। सारे जीवन अगर सन्यासी बन करके रही। जैसे अभी सन्यासी है कि प्रवृत्ति में है? सन्यासी है। तब?

जिज्ञासू – माना अष्टदेव कहीं न कहीं संबंधों में बाप के नजदीक रहते हैं।

बाबा – कोई न कोई संबंध में।

Student: It means that even Vaishnavi will not remain together in every birth with only one?

Baba: That is about the relationship. That is about the relationship of a husband and a wife, which leaves a deeper impression, in which the colour of the company is applied more. It was said regarding that relationship. And that relationship does not exist in every birth.

Student: She will remain close (to the Father) in other relationships as well, won't she ? That is if she does not become (related in the relationship of a husband or a wife).

Baba: She will become a *sanyasi* (a virgin or a bachelor). *Varau Shambhu na toh rahu kunwaari* (I shall wed Shambhu. otherwise I will remain a virgin) If she remains a *sanyasi* throughout the life. For example is she a *sanyasi* or a householder now? She is a *sanyasi*. Then.

Student: It means that the eight deities live with the Father in relationship somewhere or the other.

Baba: In some relationship or the other.

समय – 39.21

जिज्ञासू – बाबा सुबह के मुरली कानसनट्रेषन से सुन रहे हैं। बाद में कभी बीच में....।

बाबा – कम से कम 24 घंटों में एक बार तो बाप की मुरली ध्यान से सुनना चाहिए।

जिज्ञासू – हाँ वो तो ठीक है। माना सुबह का क्लास ठीक से सुनना चाहिए। दूसरा तो कभी-कभी टाइम पास के लिए लगा लेते हैं।

बाबा – 24 घंटे लगाए रखो। संस्कार पड़ जायेंगे बेलगाव से सुनने के। अगर 24 घंटे तुम ऐसे ही लगा दिया। बाबा की वाणी चल रही है और हम रावण का काम कर रहे हैं। तो संस्कार कैसे पड़ेगे?

Time: 39.21

Student: Baba we listen to the Murli with concentration in the morning. Later on, sometimes in between.....

Baba: At least once in 24 hours we should listen to the Father's Murli carefully.

Student: Yes, that is alright. That means we should listen to the morning class carefully. Sometimes we play (the cassette) a second time for timepass.

Baba: Let it play for 24 hours. You will develop the sanskars of listening with disinterest; if you continue to play it for 24 hours like this. Baba's *vani* is going on and we are performing Ravan's tasks. So, what kind of a *sanskar* will we develop?

जिज्ञासू – बाबा, याद के समय तो फर्क पड़ जाता है ना। याद की यात्रा में रहना माना कैसे रहें?

बाबा – वो तो कहा है कर्मयोग करना ही करना है। क्या? हाँ। अकेला बुद्धियोग वो ठीक नहीं है वो निवृत्ति मार्ग हो गए। हमारा कर्मयोग है। कर्म और योग दोनों चाहिए।

Student: Baba, it makes a difference at the time of remembrance, doesn't it? How should we remain in the journey of remembrance?

Baba: For that it has been said that we have to anyways do *karmayog*. What? Yes. Only the connection of the intellect (without karma) is not good; that is a path of renunciation. Ours is a *karmayoga*. *Karma* and *yog*, both are required.

समय – 40.41

जिज्ञासू – बाबा, शंकर पार्वती के ऊपर फिदा हो गया। वीर्य गिरा तब बिच्छु-टिन्डन पैदा हुआ। ऐसे बोला है मुरली में। और ये भी बोला है कि शंकर पार्वती को युगल नहीं कहेंगे। तो ये जो फिदा हो गया...।

बाबा – फिदा हो गया वो शास्त्रों में भक्तों ने लिखा है। या बाबा ने बताया है? भक्तों की बात बताई।

Time: 40.41

Student: Baba, Shankar was attracted by Parvati. When he lost his *veerya* (vigour), scorpions and spiders were born. It has been said like this in the Murlī. And it has also been said that Shankar Parvati will not be called a couple. So, this story about his getting attracted to...

Baba: Has the story that 'he got attracted' been written in the scriptures by the devotees or has it been told by Baba? It was mentioned (in murlī) about what the devotees say (about Shankar).

जिज्ञासू – माना विष्णु पार्टी के एक कैसेट में सुना उसमें भी बोला है कि जब शंकर उल्टा कर्म करता है तो बिच्छु-टिन्डन पैदा होता है। तो उल्टा कर्म क्या होता है?

बाबा – उल्टा कर्म यही होता है कि तुम सब पार्वतियाँ हो। क्या? सब पार्वतियाँ नम्बरवार हैं या एक जैसी हैं?

जिज्ञासू – नम्बरवार हैं।

Student: I mean to say that I have heard in a cassette related to the Vishnu Party; even in that it has been said that scorpions and spiders are born when Shankar performs an opposite task. So, which opposite act is performed (by Shankar)?

Baba: The opposite act that takes place is that 'all of you are Parvatis'. What? Are all Parvatis numberwise or alike?

Student: They are numberwise.

बाबा – तो शंकर तो अव्वल नम्बर है या नम्बरवार है? जो शंकर है वो तो नेक्स्ट टु गॉड एक ही है। तो जब एक है तो उसका संगी-साथी भी कैसा हो? ऐसा ही श्रेष्ठ होना चाहिए ना। अगर वैसा ही संगी-साथी श्रेष्ठ होगा, श्रेष्ठ पुरुषार्थी होगा तो बिच्छु-टिन्डन पैदा होंगे या देवता पैदा होंगे? अगर अदिति के संगी-साथी होंगे। तो

अदिति माना अद्वैत पैदा होंगे। और दिति के संगी-साथी होंगे तो द्वैतवादी जरूर पैदा होंगे। द्वैतवादी माना दैत्य। वो भी जरूरी है। अगर वो दैत्य पैदा न हो तो नई दुनियाँ कभी स्थापन हुई देखने में नहीं आवेगी।

Baba: So, is Shankar number one or numberwise? Shankar, who is next to God is only one. So, when he is one, how should his companion be? His companion should also be equally elevated, should she not? If the companion is equally elevated, if the companion is the one who makes elevated effort, then will scorpions and spiders be born or will deities be born? If the companion is Aditi, then those who are born will be aditi that is to say *adwait* (monoists). And if the companion is Diti then those who take birth will certainly be dualists (*dwaitwaadi*). *Dwaitwaadi* means demons. They are also required. If those demons do not take birth, then the new world will never appear to have been established.

जिज्ञासू – माना दिति से जो पैदा हुआ वो नष्टदेव है ना।

बाबा – दिति से दैत्य पैदा हुए।

जिज्ञासू – माना नष्टदेव पैदा हुए।

बाबा – हाँ जी, हाँ जी।

जिज्ञासू – नष्टदेव होंगे ना यज्ञ के आदि में। माना दिति से ज्ञान लिया क्या? जन्म लिए ना?

बाबा – हाँ, दिति से दैत्य।

Student: It means that those who were born from Diti are the deities of destruction (*nashtdev*), aren't they?

Baba: The demons were born from Diti.

Student: It means that the deities of destruction were born.

Baba: Yes, yes.

Student: The deities of destruction must have existed in the beginning of the yagya, mustn't they? Does it mean that they obtained knowledge from Diti? They took birth, didn't they?

Baba: Yes, *daitya* (demons) were born from Diti.

जिज्ञासू – माना अष्टदेव जो हैं अदिति से जन्म लिया।

बाबा – अदिति से जन्म लेते हैं माना उनकी जो परिपूर्णता होती है वो उस शक्ति के आधार पर होती है, जो चंद्रवंश की बीज है।

जिज्ञासू – योगिनी बहन।

बाबा – हाँ जी।

Student: It means that the eight deities took birth from Aditi.

Baba: They take birth from Aditi means that their perfection is dependant on that *shakti*, who is the seed of the Moon Dynasty.

Student: Sister Yogini (included among the eight deities).

Baba: Yes.

समय – 42.24

जिज्ञासू – बाबा, अभी एक आत्मा के नब्बे वर्ष हैं। उसको बाप का परिचय बराबर बैठा है। वो एडवान्स में चलता है। तो अभी शरीर छोड़ रहा है तो क्या वो सूक्ष्म शरीर धारण करेगा?

बाबा – अगर अकाले मौत में शरीर छोड़ा है तो सूक्ष्म शरीर धारण करेगा थोड़े समय के लिए।

जिज्ञासू – नहीं, नेचुरल डेथ होता है तो?

बाबा – नेचुरल डेथ होता है तो शरीर धारण करेगा। फिर एडवान्स में चलेगा।

जिज्ञासू – फिर भी एक बार शरीर छोड़े तो?

बाबा – और फिर भी एक बार शरीर छोड़े तो। उसके बाद फिर भी एक बार शरीर छोड़े तो।

Time: 42.24

Student: Baba, now a soul('s body) is ninety years old. He has understood the introduction of the Father properly. He is following the advanced knowledge. He is going to leave his body now. So, will he take up a subtle body?

Baba: If he has left the body due to untimely death, then he will take up a subtle body for some time.

Student: No, if the death is natural?

Baba: If the death is natural, then he will take up a body. He will follow the advanced knowledge once again.

Student: What if he leaves his body once again?

Baba: And what if he leaves his body once again? (And what) If he leaves the body once again after that?

जिज्ञासू – माना विधर्मी बनते हैं क्या?

बाबा – नहीं ऐसी कोई बात थोड़े ही है। तुम बच्चों में कोई-कोई दो-तीन बार जन्म लेते हैं। बस। ज्यादा से ज्यादा दो बार संगमयुग में और उससे भी ज्यादा तीन बार। बस।

जिज्ञासू – माना एडवान्स में आए तो दो बार हो गया।

बाबा – हाँ दो बार।

जिज्ञासू – दो मिस हो गया तो तीन बार।

बाबा – आदि में भी होने चाहिए और अंत में भी होने चाहिए।

Student: I mean to say - will he become *vidharmi*?

Baba: No, it is not like this. Some among you children take two or three births (during the Confluence Age). That is all. At the most he may take two births in the Confluence Age or if it is more than that it could be at the most three births. That is all.

Student: It means that if someone enters the path of advanced knowledge, it happens to be the second birth.

Baba: Yes, twice.

Student: If not twice then a third time .

Baba: They should be in the beginning as well as at the end.

समय – 44.05

जिज्ञासू – बाबा, कर्मयोग से हिसाब-किताब चुक्तु करना या तो कर्मभोग से या तो धर्मराज की सजा से चुक्तु करना पड़ता है। लेकिन बाबा जो बीमारी आती है। वो कर्मभोग है। तो धर्मराज की सजायें उससे कम होते हैं बताया है। माना ये भी बाबा बोलते हैं कि जो बीमार, दुखी, परेषान हो रहे हैं। वो तो श्रीमत पर नहीं चल रहे हैं।

बाबा – हाँ ये बताया कि जो बीमार-धीमार, दुखी, रोगी, परेषान रहते हैं। क्या? वो श्रीमत पर नहीं चलते हैं वो ही रहते हैं।

Student: Baba, the karmic accounts have to be cleared through *karmayoga* or through *karmic* sufferings (diseases, etc.) or through the punishments of Dharmaraj. But the disease that comes is a karmic suffering. So, it has been said that they the punishments of Dharmaraj are reduced through the karmic sufferings. I mean to say, Baba also says that those who are becoming sick, sorrowful and disturbed are not following the *shrimat*.

Baba: Yes, it has been told that “those who remain sick, sorrowful, diseased, disturbed”; what? Only those who do not follow *shrimat* remain like that.

जिज्ञासू – माना ये दोनों में अंतर क्या है बाबा। बीमारी से हिसाब-किताब भी चुक्तु हो रहा है। तो....।

बाबा – किसी की जीवन भर बीमारी-धीमारी चलती रहे। दुखी ही दुखी नज़र आता है। तो वाईब्रेशन भी कैसे छोड़ेगा? दुख के ही छोड़ेगा। और धर्मराज की सजाएँ खाने वाले कैसे वाईब्रेशन छोड़ेंगे? दुख के ही वाईब्रेशन छोड़ेंगे माना फायदा क्या हुआ? आदि में भी दुखी तो अंत में भी दुखी। और वो तो लगातार दुखी।

Student: I mean to say, what is the difference between both of them, Baba? The karmic accounts are also getting cleared through diseases. So....

Baba: (Suppose) someone remains sick throughout the life. He (always) appears to be sorrowful . So, what kind of vibration will he spread? He will spread vibration of sorrow . And what kind of vibration will those, who suffer punishments of Dharmaraj, spread? They will spread the vibration of sorrow that is to say, what was the benefit? He was sorrowful in the beginning as well as at the end. And he is continuously sorrowful.

जिज्ञासू – हिसाब-किताब भी होगा ना? बाबा।

बाबा – नहीं, हिसाब-किताब यही बताया कि श्रीमत पर न चलने वाले बीमार, धीमार, दुखी, रोगी, परेषान रहेंगे। खुद भी परेषान रहेंगे दूसरों को भी परेषान करेंगे।

जिज्ञासू – माना उनका धर्मराज की हिसाब-किताब चुक्तु नहीं हो रहा है क्या?

बाबा – क्यों नहीं, उनको भी सजा मिल सकती है जो बीमार, धीमार, दुखी, रोगी, परेषान रहते हैं। क्योंकि खुद दुखी होते हैं और दूसरों को दुखी करते हैं। तो धर्मराज की सजा के हकदार नहीं बनेंगे?

जिज्ञासू – माना थोड़ा बचेगा?

बाबा – क्यों नहीं बचेगा।

Student: There must also be karmic account (for that), isn't it? Baba.

Baba: No, the karmic account that was mentioned is that those who do not follow *shrimat* will remain sick, sorrowful, diseased and disturbed. They themselves will remain disturbed and bring about disturbance to others as well.

Student: Does it mean that the karmic accounts with Dharmaraj are not getting cleared (through the suffering)?

Baba: Why (will they) not (suffer the punishments of Dharmaraj)? They too can get punishments. That is those who remain sick, sorrowful, diseased and disturbed. Because they themselves experience pain and also bring pain to others. So, they become entitled to the punishments of Dharmaraj.

Student: Does it mean that some (punishment) will be left?

Baba: Why not?

समय – 45.39

जिज्ञासू – बाबा, ये माता पूछती है। अभी किसी का 80-90 साल हुआ होगा वो अभी आके एड्वान्स ज्ञान लेंगे तो पूर्वज हो सकते हैं क्या?....आदि का आत्मा हो सकता है क्या?

बाबा – ये क्या बात हो गई। पूर्वज माना पहले जन्म में थे। अगर एड्वान्स में आए हैं तो पहले जन्म में जरूर थे। भले थोड़े समय के लिए रहे हों।

जिज्ञासू – लेकिन उनको अभी तो 80-90 वर्ष हो गया। फिर?

बाबा – अच्छा 80-90 के जो इस समय हैं। वो पूर्व जन्म में भले न हो ज्ञान में; लेकिन प्रजापिता के साथ जरूर रहे होंगे। वो संस्कार उनमें जरूर रहे होंगे। संग-साथ के।

Time: 45.39

Student: Baba, this mataji is asking that if someone is 80-90 years old now and if he comes and obtains the advanced knowledge now, so, can he be an ancestor (soul)?can he be a soul of the beginning?

Baba: What is this? An ancestor means someone who was in the past birth. If they have entered the path of advanced (knowledge), then certainly they must have been in the past birth even if they had been for a little while.

Student: But he is 80-90 years old now. Then?

Baba: OK, the one who is 80-90 years old now; even if he would not have obtained the knowledge in the past birth, but he must have certainly been with Prajapita. He must have certainly had those sanskars of being in his company.

समय – 46.23

जिज्ञासू – बाबा, धर्मराज के साथ चित्रगुप्त भी होता है। बाबा बताया है कि उनका चित्र है लेकिन गुप्त है बताया। माना वो चित्रगुप्त तो सबका हिसाब-किताब चुक्तु करता है ना?

बाबा – चित्रगुप्त ही हिसाब-किताब चुक्तु करते हैं या धर्मराज के दूत भी चुक्तु करते हैं। चित्रगुप्त तो मुखिया है उनमें। हेड क्लर्क।

जिज्ञासू – माना वो भी एन.एस. में रहेंगे क्या?

बाबा – और कहाँ आसमान में रहेंगे क्या?

Time: 46.23

Student: Baba, there is Chitragupta (the accountant of Yamraj) along with Dharmaraj. Baba, it has been said that he has a form (citr), but it has been said that he is incognito (gupt). It means that Chitragupta clears the karmic accounts of everyone, doesn't he ?

Baba: Does Chitragupt himself clear the karmic accounts or do the messengers of Dharmaraj also clear (the accounts). Chitragupta is the chief among them. The head clerk.

Student: Does it mean that they will also be in the NS?

Baba: Where else will they be ? In the sky?

जिज्ञासू – माना वो जो भी हिसाब करते हैं ना....।

बाबा – अब कंप्यूटर है, आजकल चल गया है। कंप्यूटर में, सरेन्डर हो या नॉन-सरेन्डर हों। गलतियाँ तो कर ही रहे हैं। और गलतियाँ एक-एक की कंप्यूटर में टाईप करते जाओ। नूँध होती जाए प्रूफ सहित। तो चित्रगुप्त का लेखा जोखा तैयार

नहीं हो रहा है? प्रूफ दिखाकरके सजा दूंगा। क्या? बिना प्रूफ प्रमाण के सजा नहीं मिलती है।

Student: It means that whatever account they maintain....

Baba: Well there is computer; now-a-days it is popular. In computers, whether it is the surrendered ones or the non-surrendered ones; children are definitely committing mistakes. And if we go on typing the mistakes of everyone in the computer, if it is recorded along with proof, then, is the account book of Chitragupt not getting ready? (It is said) I will give punishments after showing the proof. What? The punishments are not given without proofs.

जिज्ञासू – माना बाबा को लिख के देने से।

बाबा – बाबा को लिख के देने से वो तो फाड़ देते हैं। वो तो ज्यादा से ज्यादा साक्षात्कार में दिखा देते हैं कि देखो तुमने ये दिया था पोतामेल।

जिज्ञासू – नहीं, उसमें आधा क्षमा हो जाता है ना।

बाबा – आधा माफ हो गया फिर दुबारा दे दिया लिख करके। तो आधा ही माफ होगा कि कुछ कम माफ होगा?

जिज्ञासू – पुरुषार्थ से कम होता है ना।

बाबा – हाँ पुरुषार्थ भी कम होगा और माफ भी कम होगा। ऐसे ही तीन बार ज्यादा से ज्यादा माफ। फिर बाद में तो माफ नहीं होगा।

Student: I mean to say, by giving to Baba in writing....

Baba: When they give (the potamail) to Baba in writing he tears it (after reading it). At the most He shows in the vision that look, you had given this potamail.

Student: No, half (of the sins) is pardoned in it, isn't it?

Baba: Half (of the sins) was pardoned; then it was given in writing once again. So, will half of it be pardoned or will it be pardoned to a lesser extent?

Student: It is reduced through efforts, isn't it?

Baba: Yes, so, the efforts will be less and it will be pardoned to a lesser extent. In this manner, at the most it is pardoned three times. Then it will not be pardoned.

समय – 48.00

जिज्ञासू – बाबा, ये माता पूछती है धर्मराज का पनिषमेन्ट अपने को ही मालूम पड़ेगा कि सबको मालूम पड़ेगा?

बाबा – सबको मालूम पड़ेगा। तब तो पता चलेगा इनका ये पद है। सबके सामने बेइज्जती हो जावेगी।

Time: 48.00

Student: Baba, this mother is asking whether the punishment of Dharmaraj will be known only to the self or to everyone?

Baba: Everyone will come to know. Only then it will be known that this is his post. He will lose the honour in front of everyone.

समय – 48.18

जिज्ञासू – तो वो चित्रगुप्त किस धर्म में कनेक्टेड है, बाबा?

बाबा – धर्मराज कौनसे धर्म का होगा?

जिज्ञासू – इस्लाम में।

बाबा – इस्लाम धर्म का होता है?

जिज्ञासू – माना कनेक्टेड होता है।

बाबा – आखरी जन्म में कनेक्ट हो जाए तो क्या अंतर पड़ता है?

जिज्ञासू – माना चित्रगुप्त भी उस धर्म से ही निकलता है।

Time: 48.18

Student: So, that Chitragupt is connected to which religion Baba?

Baba: Dharmaraj is related to which religion?

Student: Islam.

Baba: Does he belong to Islam?

Student: I mean to say he is connected (with that religion).

Baba: Does it make a difference if he is connected (to Islam) in the last birth?

Student: Does it mean that Chitragupt also emerges from the same religion?

समय – 48.28

जिज्ञासू – चित्रगुप्त कितना होता है, बाबा?

बाबा – अरे! कोई हेड ओफिस होता है तो क्या उसमें एक ही लेखा जोखा करने वाला होता है या उसके सहयोगी भी होते हैं?

जिज्ञासू – सहयोगी भी होते हैं।

बाबा – हाँ, सहयोगी भी होते हैं।

Time: 48.28

Student: How many Chitragupts are there Baba?

Baba: Arey! If there is a head office, then is there only one accountant or does he have helpers as well?

Student: There are helpers as well.

Baba: Yes, there are helpers as well.

समय – 48.49

जिज्ञासू – बाबा, 1976 में दो सीट फिक्स हुआ था ना। उसके बाद तीन सीट फिक्स हो गया ऐसा भी बताया।

बाबा – बताया।

जिज्ञासू – तीसरा सीट तो छोटी मम्मी है।

बाबा – छोटी मम्मी?

जिज्ञासू – फर्स्ट में कौन-कौन दो हैं?

बाबा – अरे! 76 में कौन-कौन से दो थे?

जिज्ञासू – लक्ष्मी-नारायण।

Time: 48.49

Student: Baba, two seats were fixed in 1976, weren't they ? After that, it was also said that three seats have been fixed, wasn't it?

Baba: It was said.

Student: The third seat is of the junior mother.

Baba: The junior mother?

Student: Who are the first two?

Baba: Arey! Who were the two that existed in 1976?

Student: (The souls of) Lakshmi and Narayan.

बाबा – लक्ष्मी-नारायण। तो छोटी मम्मी नहीं थी लक्ष्मी? उसे बड़ी मम्मी बना दिया।

जिज्ञासू – फिर वो छोटी मम्मी है। छोटी मम्मी के अंदर शिव बाप प्रवेश नहीं होता है ना।

बाबा– तो ठीक है नहीं होता है तो उससे क्या अंतर पड़ता है?

जिज्ञासू – वो कैसे माना....? वो विजयमाला है ना?

Baba: Lakshmi-Narayan. So, was the junior mother not Lakshmi? You considered her the senior mother.

Student: Then, she is the junior mother. The Father Shiv does not enter the junior mother, does He?

Baba: It is correct that He does not (enter); so, what is the difference that it makes?

Student: I mean to say how is that....? She belongs to the rosary of victory (*vijaymala*), doesn't she ?

बाबा – माना भगवान आकर कार्य करता है। वो सिर्फ वाचा चलाने का ही काम करता है? शिव भगवान आकरके सिर्फ मनसा चलाने का ही काम करता है सिर्फ वाचा चलाने का ही काम करता है या प्रैक्टिकल कर्म भी करता है?

जिज्ञासू – प्रैक्टिकल कर्म।

बाबा – तो प्रैक्टिकल कर्म विष्णु के द्वारा कौन करके दिखाता है? छोटी माँ, बड़ी माँ या बाप?

जिज्ञासू – छोटी माँ।

बाबा – छोटी माँ ही जो कर्म करती है वो 63 जन्मों में क्यों नहीं करके दिखा दिया?

Baba: It means that God comes and performs His task. Does He perform only the task of speaking? Does God Shiv come and perform only the task of creating thoughts or does He perform only the task of speaking or does He also perform action in practical?

Student: (He also performs) practical actions.

Baba: So, who performs the practical actions through Vishnu? The junior mother, the senior mother or the Father?

Student: The junior mother.

Baba: If it is only the junior mother who performs the actions, then why did she not perform such actions in the (past) 63 births?

समय – 50.04

जिज्ञासू – बाबा, धर्मराज को देखते हैं तो सभी डरते हैं ना? क्योंकि वो दंड देने वाला है।

बाबा – जो चोर नहीं होंगे। डकैत नहीं होंगे। लुच्चे-लफंगे के काम नहीं किए होंगे। तो वो क्यों डरेंगे?

जिज्ञासू – तो अगर किसी को धर्मराज के नयनों से शांति अनुभव होगी। उनको धर्मराज की सजा नहीं है क्या बाबा?

Time: 50.04

Student: Baba, everyone is frightened on seeing Dharmaraj, aren't they? It is because he gives punishments.

Baba: Why will those who are not thieves, those who are not dacoits, those who have not acted like a lewd and a loafer fear (Dharmaraj)?

Student: So, if someone experiences peace through the eyes of Dharmaraj, will they not suffer Dharmaraj's punishment Baba?

बाबा – धर्मराज की दृष्टि लेनी है?

जिज्ञासू – दृष्टि नहीं लेनी है; लेकिन धर्मराज के नजदीक आने से उनको शांति का अनुभव होता है। इसका मतलब क्या?

बाबा – होगा ही। जिसको सजाएँ नहीं खानी है। वो शांति का अनुभव करेगा या अशांति का अनुभव करेगा? आठ के अलावा बाकी सब डरेंगे। जो आठ के लिस्ट में होंगे वो क्यों किसी से डरेंगे? सच तो बिठो नच।

Baba: Should we take *drishti* from Dharmaraj?

Student: We should not obtain *drishti*, but by coming close to Dharmaraj, they experience peace. What does it mean?

Baba: They will certainly experience. Will the one who does not have to suffer punishments experience peace or will he experience disturbance? Except eight everyone else will fear. Why will those who are included in the list of eight fear anyone? *Sach toh bitho nach* (the one who is truthful will dance).

समय – 51.02

जिज्ञासू – बाबा, अंत में करोड़पति, लखपति सभी ब्रह्माकुमारियों के पास बर्तन माजने के लिए आएँगे बताया ना।

बाबा – वो उनमें से बहुतेरे खुशी-खुशी करेंगे। खुशी-खुशी बर्तन माजेंगे। टट्टी-पेषाब साफ करेंगे या उनको दुख होगा?

जिज्ञासू – दुख तो होगा ही ना।

बाबा – दुख होगा? उनमें इतना ज्ञान होगा? भक्ति समाई होगी उनके अंदर कि अरे भगवान आया, भगवान को हमने इतनी सेवा कर ली। उनके अंदर भक्ति समाई हुई होगी या ज्ञान होगा?

जिज्ञासू – भक्ति समाई होगी।

Time: 51.02

Student: Baba, it has been told that in the end all the billionaires and millionaires will come to the Brahmakumaris to wash the utensils, isn't it?

Baba: Many of them will do it happily. They will wash utensils happily. They will clean the shit and urine or will they feel sorrowful?

Student: They will certainly experience sorrow, won't they?

Baba: Will they experience sorrow? Will they have so much knowledge? There will be bhakti in them, they will think that God came, we served God so much. Will there be bhakti in them or will there be knowledge?

Student: They will be immersed in *bhakti*.

बाबा – भक्ति समाई हुई होगी तो खुशी ही होगी। भक्तों को जीवनमुक्ति नहीं मिलती है क्या? नहीं मिलती? उनको भी मिलती है। भगवान के भक्त भी है, भगवान के प्रजा भी है, भगवान के वारिसदार भी है।

जिज्ञासू – लेकिन विकारी अंदर नहीं आ सकते बोला है ना?

बाबा – ह?

जिज्ञासू – मुरली में आया कि विकारी बनने से अच्छा बर्तन माजना अच्छा।

बाबा – उस समय उनकी बुद्धि में ज्ञान बैठ जाएगा भगवान आया हुआ है तो विकार उड़ जावेंगे या रह जावेंगे? वो भी तो सतोप्रधान स्टेज में होंगे उस समय।

Baba: If they are immersed in *bhakti*, then they will experience only happiness. Don't the devotees get *jevanmukti*? Don't they? They too get. There are God's devotees as well as God's subjects (*praja*); there are God's inheritors as well.

Student: But it has been said that the vicious ones cannot come inside, hasn't it?

Baba: Hm?

Student: It has been mentioned in the Murli that it is better to wash utensils than to become lustful.

Baba: At that time, when the knowledge that 'God has come' fits in their intellect, then will the vices vanish or will they remain? They will also be in a pure stage at that time.

समय – 52.30

जिज्ञासू – जब सन्यासी निकलेंगे तब तुम्हारा जीत हो जाएगा। लेकिन सन्यासी धर्म का बीज तो गंगाजी है। तो गंगा का भी, सन्यास धर्म का बीज जो है अष्टदेव में है। माना उनमें कनेक्टेड जो अष्टदेव है। सन्यास धर्म में जो अष्टदेव है अग्नि का पार्ट बजाने वाला। तो.....।

बाबा – अग्नि का पार्ट बजाने वाला?

जिज्ञासू – माना सन्यासी अग्नि दिखाते हैं ना। माना चित्र में।

बाबा – हाँ।

Time: 52.30

Student: When *Sanyasis* emerge, then you will gain victory. But the seed of *Sanyas* religion is (the soul of) *Gangaji*. So, the seed of *Gangaji*, the seed of *Sanyas* religion among the eight deities, i.e. the particular deity among the eight deities connected to them, the deity related to *sanyas* religion, who plays the part of fire (agni) among the eight deities. So....

Baba: The one who plays the part of fire?

Student: I mean to say fire is shown in connection with *sanyasis* in the picture.

Baba: Yes.

जिज्ञासू – वो निकलने से जीत हो जाएगा क्या?

बाबा – अग्नि कैसे?

जिज्ञासू – अष्टदेव का चित्र है ना बाबा उसमें सन्यास धर्म

बाबा – तो पहला चित्र तो हो गया ईश्वर का, और दूसरा चित्र हो गया?

जिज्ञासू – कुबेर का।

बाबा – और तीसरा?

जिज्ञासू – धर्मराज।

बाबा – धर्मराज और चौथा?

जिज्ञासू – क्रिष्चियन।

बाबा – बौद्धी कहाँ चला जाएगा?

जिज्ञासू – हाँ, हाँ बौद्धी धर्म माना इन्द्र।

Student: Will the victory be achieved when that soul emerges?

Baba: How is it fire?

Student: There is a picture of the eight deities *Baba*. In that *sanyas* religion...

Baba: So, first picture is of *Ishwar*, and what about the second picture?

Student: *Kuber*.

Baba: And the third one?

Student: *Dharmaraj*.

Baba: *Dharmaraj*; and the fourth one?

Student: *Christian*.

Baba: Where will the *Buddhist* go?

Student: Yes, yes, *Buddhism* means *Indra*.

बाबा – ये सारे घुंताड़े भिड़ाने से फायदा नहीं है। वो चित्र है भक्तिमार्ग के। हो सकता है कोई और चित्र निकल आए तो? तो डब्बा गोल हो जाएगा कि नहीं।

जिज्ञासू – माना वो चित्र ठीक नहीं है क्या?

बाबा – भक्तिमार्ग में सब है भूसा। जितना बाबा बताए उतना बखर।

जिज्ञासू – माना जो अष्टदेव में सन्यास धर्म का जो गुप है...

Baba: There is no benefit in making all these calculations. Those pictures belong to the path of worship. It is possible that some other picture may emerge. Then? Then will everything not prove to be a waste?

Student: Does it mean that that picture is not correct?

Baba: Whatever is in the path of worship is chaff (*bhoosa*). Whatever Baba tells is useful (*bakhar*).

Student: Does it mean that the group related to *sanyas* religion among the eight deities.....

बाबा – जो भी चित्र मिलें हैं। अष्टदेवों के वो मनुष्यों के बनाए हुए मिलें हैं या बाबा ने उनका क्लेरिफिकेशन दे दिया?

जिज्ञासू – मनुष्यों के बनाए हुए मिलें हैं।

बाबा – हाँ तो फिर?

जिज्ञासू – माना वो चेंज हो जाएगा क्या?

बाबा – अगर कोई नया चित्र निकल आता है पुराने ते पुराना। तो नई बात इजाज हो जाती है तब क्या करेंगे?

जिज्ञासू – कुछ नहीं करेंगे। मानना पड़ेगा।

Baba: Whatever picture of the eight deities that have been found; have they been prepared by human beings or has Baba given the clarification of those pictures?

Student: The pictures prepared by the human beings have been found.

Baba: Yes, then?

Student: I mean to say, will that change?

Baba: If a new oldest picture emerges, if a new discovery is made, then what will you do?

Student: We will not do anything. We will have to accept.

बाबा – इसलिए बाबा की मुरली पर, बाबा की अव्यक्त वाणी पर या बाबा के टीचर के रूप में दिय गए क्लेरिफिकेशन पर मनन-चिंतन-मंथन करना चाहिए। बाकी चित्रों, बाकी षास्त्रों उनमें क्या भरा हुआ है?

जिज्ञासू – भूसा।

बाबा – भूसा खाते हो तुम।

जिज्ञासू – नहीं बाबा।

बाबा – नहीं बाबा।

Baba: That is why one should think and churn on Baba's Murli, Baba's Avyakta Vani or on the clarifications given by Baba in the form of a teacher. What is contained in the other pictures and other scriptures?

Student: Chaff (*bhoosa*).

Baba: Do you eat the chaff?

Student: No Baba.

Baba: No Baba.

जिज्ञासू – वो सन्यास धर्म में जो कनेक्टेड हैं अष्टदेव। उनका क्या चित्र है?

बाबा – जैसा-जैसा टाइम आएगा वैसा-वैसा प्रत्यक्ष होता जावेगा।

जिज्ञासू – माना अभी नहीं बताएंगे।

बाबा – ये सब चिंतन करना है परचिंतन। हम क्या करें? हम किस धर्म के हैं। हम किस ग्रुप के हैं?

जिज्ञासू – माना चिंतन नहीं करना है।

बाबा – परचिंतन करना है या स्वचिंतन करना है?

जिज्ञासू – परचिंतन नहीं करना है।

Student: The deity among the eight deities who is connected to the *sanyas* religion. What is the picture pertaining to him?

Baba: As the time comes, it will be revealed.

Student: It means that you will not tell now.

Baba: Thinking about all this is thinking about others/other things (*parchintan*). What should we do? We belong to which religion? We belong to which group?

Student: It means that we should not think.

Baba: Do we have to think about others/other things or do we have to think about ourself (*swachintan*)?

Student: We should not create (wasteful) thoughts about others/other things.

बाबा – तो हमें अपने ग्रुप का पता चल गया? जिसको अपने ग्रुप का पता चल जाएगा। वो पहले अपने ग्रुप में बुद्धि चलाएगा या परचिंतन में बुद्धि चलाएगा? पहले अपने में बुद्धि चलाएगा।

जिज्ञासू – अष्टदेव पूर्वज नहीं हैं क्या?

बाबा – सबके पूर्वज हैं?

जिज्ञासू – सूर्यवंशियों के।

Baba: So, did we come to know about our group? Will the one, who has come to know about his group, think about his group or will he think about others/other things? First he will think of himself/his group.

Student: Are the eight deities not the ancestors?

Baba: Are they ancestors of everyone?

Student: Of the *Suryavanshis*.

बाबा – हमारे सबके पूर्वज एक ही है या अलग-अलग हैं? अलग-अलग हैं। पूर्वज माना सबसे पहले जो पैदा हुआ हो। हमारे वंश में।

जिज्ञासू – एक का करना है। अष्टदेवों का पूरा नहीं करना है।

बाबा – वो भी ठीक है। एक का करना है; लेकिन एक का भी कौन करेंगे? अंत तक एक का वो ही करेंगे जो उसी वंश में होंगे। नहीं तो कुबेर के वंश में होंगे तो अंत तक उनको कुबेर ही अच्छा लगेगा। कोई दूसरा या भगवान भी उतर जाए तो भी अच्छा नहीं लगेगा।

Baba: Do we have common ancestor (*poorvaj*) or different ancestors? They are separate. An ancestor means someone who was born first of all in our dynasty.

Student: We have to think of one. We should not think about all the eight deities.

Baba: That is also correct. We have to think of one, but who will think of one? Only they will think about 'one' till the end, who belong to that dynasty. Otherwise, if they belong to the dynasty of Kuber, then they will like Kuber till the end. Even if any other person or even God descends, they will not like that one.

समय – 56.17

जिज्ञासू – बाबा, अंतिम समय में राम ही रावण, कृष्ण ही कंस का पार्ट बजाता है। लेकिन राम और कृष्ण की आत्माएँ अच्छी है। लेकिन अंत में रावण और कंस दोनों के पार्ट अलग-अलग है। तो एक ही शरीर, एक ही पार्ट। कैसे?

बाबा – आत्मा अलग हो जाती हैं या ज्वाइंट (joint) हो जाती हैं। हमेशा के लिए?

जिज्ञासू – आत्मा ज्वाइंट हो जाती हैं।

बाबा – ज्वाइंट हो जाती हैं हमेशा के लिए?

जिज्ञासू – हमेशा के लिए नहीं।

Time: 56.17

Student: Baba, in the last period, Ram plays the role of Ravan and Krishna plays the role of Kansa. Ram and Krishna are good souls, but in the end, the roles of both Ravan and Kansa are different. So, how is it possible that the same part is played through the same body?

Baba: Do the souls separate or do they combine forever?

Student: The souls combine.

Baba: Do they combine forever?

Student: Not forever.

बाबा – फिर? पार्ट तो हर आत्मा का अलग-अलग है ना क्षणे-क्षणे का। एक आत्मा का पार्ट दूसरी आत्मा से मिल न सके। मान लो मुकर्रर रथ है। मुकर्रर रथधारी आत्मा है रामवाली। और उसमें शिव प्रवेश करता है। तो दोनों आत्माओं का पार्ट एक ही होगा या अलग-अलग होगा?

जिज्ञासू – अलग-अलग होगा।

बाबा – फिर? जब उनका ही पार्ट हमेशा अलग-अलग है। तो राम और कृष्ण की आत्माओं का पार्ट एक जैसा कैसे हो सकता है?

Baba: Then? The part of every soul is different at every moment. The part of one soul cannot match with the part of another soul. Take for example the appointed chariot, the soul of the appointed chariot i.e. the soul of Ram, and Shiv enters him (i.e. his body). So, will the parts of both the souls be same or different?

Student: It will be different.

Baba: Then? When even their parts are different forever, then, how can the parts of Ram and Krishna become alike?

समय – 57.18

जिज्ञासू – बाबा जो पार्टधारी हैं। जैसे अष्टदेव या त्रिमूर्ति तो इसके बारे में चिंतन करना ठीक है या पहले स्वराज्य अधिकारी बनना ठीक है?

बाबा – ये रचयिता और रचना की नॉलेज है। रचना है अनेक और रचयिता है एक। तो जो रचयिता है उस रचयिता में अनेक रचना भी समाई हुई है। लेकिन बाप पांच-सात के ही पार्ट बताते हैं। सबके पार्ट नहीं बताते हैं। पांच-सात में कौन-कौन आ गए? सात आ गए। अष्टदेवों में एक तो मुख्य है ही बाप। और बाकी सात और हो गए। तो आठ हैं श्रेष्ठ में श्रेष्ठ। फिर भी जब हम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मिला हुआ है। तो औरों के चिंतन में क्यों जाएँ ? औरों के चिंतन में जाना माना हम और वंश के हैं। और धर्म में कनवर्ट होने वाले हैं, ये हमने स्वीकार कर लिया। अगर हम अष्टदेवों में से जो चंद्रवंश का बीज है, उसके चिंतन में लगे रहते हैं तो इससे क्या साबित होता है? कि हम पहले नम्बर में तो पहुंचना मुश्किल है। ऊँच ते ऊँच लक्ष्य तो लेना मुश्किल है। लेकिन दूसरे को हम पटा सकते हैं। अपने सहयोग में ले सकते हैं।

Time: 57.18

Student: Baba is it correct to think about the actors, like the eight deities or the Trimurty or is it correct to become the controller of the self (*swarajya adhikari*) first?

Baba: This is the knowledge of the creator and the creation. The creations are many and the creator is one. Many creations are also included in the creator. But the Father tells about the part of just five-seven (souls). He does not tell about everybody's part. Who all are included among the five-seven? Seven are included. Among the eight deities the main deity is the Father. And the remaining seven are others. So, the eight are the highest on high. Even then when we have found the highest on high why should we think of others? Thinking of others means that we belong to other dynasties (and that) we have accepted that we are going to be converted into other religions. If we keep thinking about the seed of the moon dynasty among the eight deities, then what does it prove? (It proves) that it is difficult for us to reach the number one. It is difficult to set the highest on high target. But we can persuade the second one. We can take her help.

जिज्ञासू – अष्टदेव तो सूर्यवंशी है ना।

बाबा – सारे ही सूर्यवंशी है लेकिन लास्ट में क्या होता है? रिजल्ट क्या आता है? एक जन्म में अलग-अलग धर्म में कनवर्ट होते हैं कि एक ही धर्म में कनवर्ट होते हैं?

जिज्ञासू – अलग-अलग धर्म में कनवर्ट हो जाते हैं।

बाबा – फिर? कोई गहरे गड्ढे में गिरता है, कोई कम गहरे में गिरता है। कोई उससे कम गिरता है तो कोई उससे कम गड्ढे में गिरता है। कोई थोड़ी देर के लिए गिरता है।

Student: The eight deities are *Suryavanshis*, aren't they?

Baba: All (the eight) are *Suryavanshis*, but what happens at last (period)? What is the result? Do they convert to different religions or do they convert to only one religion?

Student: They convert to different religions.

Baba: Then? Someone falls into a deep pit and someone falls into a less deep pit. Someone falls to a still shallower pit. And someone falls into a pit shallower than that. Someone falls for a shorter period.

जिज्ञासू – फिर भी बाद में तो सभी एक हो जाता है ना बाबा।

बाबा – बाद में तो सभी सारे ही एक हो जाएंगे। नौ लाख एक नहीं हो जाएंगे?

जिज्ञासू – पहले अष्टदेव तो होंगे ना।

बाबा – उनमें नम्बर हैं कि नहीं?

जिज्ञासू – तो एक बाप को आगे रखके स्वराज्य अधिकारी बनना ठीक है।

बाबा – सदैव यही रहना चाहिए कि एक बाप दूसरा ना कोई। नहीं तो ऊँच ते ऊँच भगवान क्यों कहा जाता है ? माना भगवानों की जो लिस्ट है वो भी ऊँच ते ऊँच और नीच ते नीच भी है।

जिज्ञासू – नहीं।

Student: Even so later on everyone unites, don't they Baba?

Baba: Later on everyone will unite anyway. Will the nine lakhs not unite?

Student: First the eight deities will unite, won't they?

Baba: Are there numbers among them or not?

Student: So, it is alright to become *swarajya adhikaari* (rulers of self) by keeping one Father in front of us.

Baba: You should always think of one Father and none else. Otherwise, how can He be called the highest on high God? It means that the list of Gods (*Bhagwaans*) includes the highest on high and also the lowest on low.

Student: No.

बाबा – फिर ऊँच ते ऊँच कहने का मतलब क्या है?

जिज्ञासू – भगवान तो एक ही है।

बाबा – एक ही है लेकिन दुनियाँ में भगवानों की लिस्ट कितनी है? ढेर भगवान है जितनी आत्माएँ हैं उतने भगवान बना दिए हैं। तो ऊँच ते ऊँच भी तो कोई होगा। वो एक है और बाकी सब नीचे ते नीचे।

जिज्ञासू – तो बाबा माना इतना विस्तार में जो ज्ञान है वो सिर्फ टाइम पास के लिए है।

बाबा – अच्छा! माना समझने-समझाने के लिए नहीं है?

जिज्ञासू – समझने-समझाने के लिए है।

Baba: Then what is meant by the 'highest on high'?

Student: God is only one.

Baba: Yes, He is one, but how big is the list of Gods in the world? There are numerous Gods; there are as many Gods as there are number of souls. So, there must be a highest on high as well. He is the one and the rest are the lowest on low.

Student: So, Baba, it means that the knowledge which has so much elaboration is just for time-pass.

Baba: Achcha! Does it mean that it is not for explaining and understanding?

Student: It is for explaining and understanding.

बाबा – ये टाइम पास हो रहा है? मस्ती मार रहे हैं?

जिज्ञासू – नहीं बाबा, ऐसे नहीं, जैसे हमारा बुद्धि

बाबा – इतना विस्तार का जो ज्ञान है वो सब बेकार है?

जिज्ञासू – बेकार नहीं है बाबा।

बाबा – जो आत्मा विस्तार में नहीं जा सकेगी वो आत्मा उतने सार में भी नहीं टिक सकेगी। जो आत्मा जितना जास्ती सार में टिकने वाली होगी। उतनी ही जास्ती विस्तार में जाने वाली होगी। जैसे बरगद का वृक्ष। उसका बीज जितना सार रूप होता है, छोटा होता है, सूक्ष्म। उतना ही वृक्ष बड़ा होता है।

Baba: Is this 'time pass' that is going on? Are we just killing time?

Student: No, it is not the case Baba. As our intellect....

Baba: Is all this elaboration of knowledge a waste?

Student: It is not a waste Baba.

Baba: The soul that is unable to go into the elaboration (*vistaar*) cannot become constant in its essence. The more a soul becomes constant in its essence, the more it will go into the elaboration. For example the banyan tree. The more its seed is essenceful, small and subtle, the more its tree is huge.

जिज्ञासू – माना बाबा अगर प्रश्न ही नहीं पूँछेंगे तो सागर मंथन का गायन नहीं आता था ना।

बाबा – कौन मना करता है कि तुम प्रश्नों कि पूँछ मत निकालो।

जिज्ञासू – भाई कह रहे है न बाबा.....

बाबा – (पूँछ) काटने वाला जब बैठा है, तो खूब निकालो। हनुमान की तरह ढंडीलाछाप।

दूसरा जिज्ञासू – नहीं बाबा वो बात के लिए नहीं पूँछा। दिल-दिमाग को जब खाली रखेगा तो भूतों का प्रवेश होगा।

बाबा – दिल-दिमाग को खाली रखेगा तो भूतों का प्रवेश (होगा), वो तो भूत प्रवेश करके ही प्रश्न कराते हैं। जो बाप के बच्चे हैं असल में, जो असल सूर्यवंशी है उनको तो प्रश्न

आते ही नहीं। वो कहते हैं जो बोला सत वचन महाराज। उन्हें प्रश्न आते ही नहीं होंगे कितनी भी कोशिश करें।

जिज्ञासू – तो फिर अभी बताया कि जितना बीज सूक्ष्म होते हैं वो उतना विस्तार को पाते हैं। माना सूर्यवंशी जो हैं वो विस्तार को नहीं पाते हैं क्या?

Student: Baba, if we do not ask questions at all, then the praise of the churning of the ocean wouldn't have been there, would it?

Baba: Who is preventing you from taking out the tail of questions?

Student: The brother is saying that, isn't he Baba?

Baba: When the one who cuts (the tail) is sitting, then take out the tail happily like Hanuman.

Student(The brother): No, Baba I did not ask for that reason. The ghosts will enter an empty mind and intellect.

Baba: When the mind and intellect is empty the ghosts (will) enter. It is the ghosts themselves who enter and make you ask questions. Those who are the true children of the Father, the true Suryavanshis do not have any questions at all. They say, whatever you say is true (*sat vachan maharaj*). However much they may try they do not get questions at all.

Student: Then it was said just now that the more subtle the seeds are, the more they achieve elaboration. Does it mean that the *Suryavanshis* do not achieve elaboration?

बाबा – जो असल सूर्यवंशी हैं वो अति सूक्ष्म कोटि के पहले से ही है। ऑलरेडी। उनमें कोई भूत प्रवेश कर ही नहीं सकता। बाप कहते हैं मैं अपने आप ही आकरके सब कुछ बताता हूँ। बाप सब कुछ अपने आप ही टाइम पर बताते हैं। तो फिर बच्चों को पूछने की दरकार है? लेकिन कोई को तसल्ली नहीं होती है। अनिश्चय ज्यादा भड़कता है। तो पूछने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

दूसरा जिज्ञासू – तसल्ली की बात नहीं है, बाबा। बाबा तो बताकर हो गया। बाबा ने तो जो बात है वो समझा दिया। फिर उस टाइम में उस आत्मा की बुद्धि में नहीं बैठा होगा। इसीलिए पूछ रहा है। समझने के लिए।

बाबा – तो उस समय पूछने के लिए मना कर दिया क्या?

दूसरा जिज्ञासू – नहीं समझने के लिए पूछा तो

Baba: The true *Suryavanshis* already belong to the most subtle category. No ghost can enter them at all. The Father says, I come and tell everything on my own. The Father Himself tells everything when the time comes. Then is there any need for the children to ask? But some people are not convinced (*tasalli*). Their faithlessness bursts. So, they are compelled to ask.

Student: It is not a question of being convinced, Baba. Baba has already explained it. Baba explained a particular topic. Then at that time it must not have fitted into that soul's intellect. That is why he is asking (questions) in order to understand.

Baba: So, was he stopped from asking at that time?

Student: No, if he asked (questions) to understand.....

बाबा – हाँ तो समझने के लिए उसी समय प्रश्न के उपर प्रश्न करते चले जाओ। मना थोड़े ही करते हैं। ये तो एक ही सभा ऐसी है जहाँ पूरी सभा के बीच में प्रश्न और उत्तर करने के लिए रेडी है बाप। और झिझकता भी नहीं है, घबड़ाता भी नहीं है कि अरे! शास्त्र पढ़ लें तब हम जवाब देंगे एक्जुरेट। तुरन्त का तुरन्त जवाब हाजिर है। हाँ, कभी कोई प्रश्न ऐसा होता है जो अभी जवाब नहीं देना है। ड्रामा प्लेन अनुसार अभी जवाब देने से नुकसान हो सकता है। तो अभी न जवाब देके आगे जवाब दे देंगे।

जिज्ञासू – बाबा तो ये भी बताया कि बाबा को जो प्रश्न पूछते हैं तो अच्छा-अच्छा जवाब आता है तो उससे सबको फायदा होता है ना।

बाबा – माना उनके कुल वाले जो होंगे, प्रश्न पूछने वालों के कुल के जो होंगे उनको फायदा होगा।

जिज्ञासू – बाबा अभी कोई नहीं पूछेगा।

बाबा – फिर भी पूछेगा।

Baba: Yes, in order to understand, you can go on asking questions upon questions at that time. You are not restricted. This is the only gathering where the Father is ready to answer the questions in front of the whole crowd. Moreover, he does not hesitate, he isn't afraid either, thinking "let me study the scriptures and then I will give an accurate reply." The reply is readily available. Yes, sometimes some questions are such that they are not to be replied at that time. There could be harm in giving a reply immediately as per drama. So, the reply will not be given at that time and will be given later on.

Student: Baba, it has also been said that the questions which are asked to Baba, if nice replies come for that, then it causes benefit to everyone, doesn't it?

Baba: It means that those who belong to their clan, those who belong to the clan of those who ask questions will get the benefit.

Student: Baba, now nobody will ask.

Baba: They will still ask.

जिज्ञासू – पूछना अच्छा है या नहीं पूछना अच्छा है?

बाबा – अगर प्रश्न अंदर आता है, कचड़ा। पेट में कचड़ा आ गया है तो कचड़ा बाहर निकालना अच्छा है या अंदर ही रखना अच्छा है?

जिज्ञासू – बाहर निकालना अच्छा है।

बाबा – अगर अंदर ही रखा और नहीं निकाला तो वो दिमाग खराब करता रहेगा। ये स्थूल पेट में भी कचड़ा भर जाता है अगर नहीं निकलता है तो क्या होता है? जो बुद्धिरूपी पेट उपर वाला है वो भी खराब होने लगता है। ऐसे नहीं करना चाहिए। जबकि बाप कोई ऐसे नहीं कहते हैं कि मत पूछो। कोई बात आती है तो बाहर निकालो। पूँछ कट जाए तो देवता बन जायेंगे।

जिज्ञासू – पूछना भी है। फिर स्टेप बाय स्टेप आगे बढ़ना भी है।

बाबा – हाँ जी।

Student: Is it good to ask or not to ask?

Baba: If a question i.e. garbage emerges within, if garbage has entered the stomach, then should that garbage be removed or is it good to keep it inside?

Student: It is good to take it out.

Baba: If it is kept within, and if it is not taken out, then it will keep spoiling the brain. What happens if the stomach is filled with garbage and if it does not come out? The intellect-like stomach that is above will also start getting spoiled. You should not do like this. whereas the Father does not say that you should not ask (questions). If some question emerges (in the intellect), then bring it out. If the tail (of questions) gets cut, then we will become a deity.

Student: We should ask. Then we should also progress step by step.

Baba: Yes.

समय– 5.14

जिज्ञासू – बाबा यमुना के कंठे पर स्वर्ग स्थापन होता है ना।

बाबा – यमुना के कंठे पर स्वर्ग स्थापन होता है, हाँ जी।

जिज्ञासू – यमुना तो मुस्लिम धर्म का बीज है।

बाबा –तो क्या हुआ?

जिज्ञासू –तो व्यभि(चारी).....

बाबा –अरे कुत्ता जाता है कि नही स्वर्ग में ?

जिज्ञासू –जाता है ।

Student: Baba, heaven is established on the banks of river Yamuna, isn't it?

Baba: Yes, heaven is established on the banks of river Yamuna.

Student: Yamuna is a seed of the Muslim religion.

Baba: So what?

Student: She is (adulterated).....

Baba: Arey! Does dog go to heaven or not?

Student: It does.

जिज्ञासू –बाबा, कुत्ता अलग है, डकैत अलग है, मुसल्मान है डकैत.....कामी कुत्ता है इस्लामी ।

बाबा – जो पाँच विकार है चोर–डकैत उनमें बड़ा डकैत कौन है?

Student: Baba, dog is separate and a robber is separate. Muslim is the robber.....the lustful dog is Islam.

Baba: Among the five vices, the thieves and robbers, who is the biggest robber?

.....

जिज्ञासू –स्वर्ग स्थापन करने के लिए उनको ही क्यों बोला है । यमुना के कंठे पर ।

बाबा – अच्छा, सुरक्षा के लिए, रात में घर की रखवाली करने के लिए, कुत्ता चाहिए कि नहीं चाहिए?

जिज्ञासू – चाहिए ।

बाबा – तो अच्छा कुत्ता चाहिए ना । हाँ, बुलडॉग ।

जिज्ञासू – माना वो इस्लाम धर्म का बीज ही है ना ।

बाबा – हाँ जी । वफादार कौन होता है मनुष्य वफादार होते हैं या कुत्ते ज्यादा वफादार होते हैं?

जिज्ञासू – कुत्ते ।

Time: 5.14

Student: Why has only she been mentioned for the establishment of heaven, i.e. on the banks of (river) Yamuna?

Baba: OK, is a dog required or not for safety; for the safety of a house during the night?

Student: It is required.

Baba: Then a good dog is required, isn't it? Yes, bull dog.

Student: It means that she is the seed of Islam, isn't she ?

Baba: Yes. Who is loyal? Are the human beings loyal or are the dogs more loyal?

Student: The dogs.

बाबा – तो वफादार चाहिए नई दुनियाँ की स्थापना में या नहीं चाहिए? चाहिए ।

जिज्ञासू – वो कहाँ वफादार होते हैं बाबा? वो तो सरेन्दर होके दो महीने भी नहीं निभाया ।

बाबा – जब तक भी निभाते हैं वफादारी से निभाते हैं या नहीं निभाते हैं औरों के मुकाबले?

जिज्ञासू – निभाते हैं ।

बाबा – तो फिर । अगर नहीं निभाते होते तो उनके गुण को छोड़ देते भगवान । उसी गुण को देखकरके उनको क्यों उठाया? कुत्ता सब कुछ छोड़ देगा लेकिन अपनी वफादारी नहीं छोड़ेगा । जिसमें जो गुण है उस गुण को ही आगे बढ़ाओ ।

Baba: For the establishment of heaven is a loyal one required or not? He is required.

Student: In what way is she loyal Baba? She did not maintain for even two months after she surrendered (herself).

Baba: Until she maintains (the relationship), did she maintain it with loyalty or not, when compared to others?

Student: She maintains.

Baba: Then? If she had not maintained, then God would have left out her virtues. Why did He uplift her by observing that very virtue? A dog will leave everything, but it will not leave its loyalty. You should promote whatever virtue whoever has.

समय – 7.19

जिज्ञासू – बाबा, आत्मा कितना समय तक बिना शरीर के रह सकती है?

बाबा – बिना शरीर के आत्मा परमधाम में ही रहती है।

जिज्ञासू – नहीं, जैसे एक्सीडेन्ट में शरीर छोड़ते हैं ना।

बाबा – हाँ, सूक्ष्म शरीर के बगैर। बिना सूक्ष्म शरीर, बिना स्थूल शरीर के आत्मा कितना समय रह सकती है। ये पूछ रहे हैं?

जिज्ञासू – नहीं, सूक्ष्म शरीर के साथ। सूक्ष्म शरीर के साथ मेकज़ीमम (maximum) कितना समय तक रह सकते हैं?

बाबा – सूक्ष्म शरीर के साथ मेकज़ीमम सैकड़ों वर्ष तक भी रह सकती है। लेकिन संगमयुग में नहीं।

Time: 7.19

Student: Baba, how long can a soul live without a body?

Baba: It is only in the soul world that a soul lives without the body.

Student: No, for example, people leave their bodies in accidents, don't they?

Baba: Yes, without the subtle body. Are you asking how long a soul can live without the subtle body as well as the physical body?

Student: No, with the subtle body. At the maximum how long can they live with the subtle body?

Baba: It can live with the subtle body for hundreds of years maximum. But not in the Confluence Age.

समय – 8.15

जिज्ञासू – बाबा, जो पतित से पावन होते हैं वो ही बाप को बार-बार बुलाते हैं। भक्ति में और ज्ञान में दोनों में।

बाबा – जो पतित से पावन बनते हैं वो पतित पावन सीता-राम को बुलाते भी हैं।

जिज्ञासू – ज्ञान में और भक्ति में भी दोनों में ही। और ये भी बोला है कि जो जन्म-जन्मांतर बाप से दूर हैं, वो बाप को बुलाते हैं बार-बार। जो जन्म-जन्मांतर नजदीक हैं वो एक बार देखें तो भी वो अच्छी रीति से याद करेंगे, ऐसे बताया है। माना दोनों में अंतर क्या है बाबा?

Time: 8.15

Student: Baba, only those, who are transformed from impure ones to pure ones call the Father again and again, in *bhakti* as well as in (the path of) knowledge.

Baba: Those, who are transformed from impure ones to pure ones, call Sita-Ram, the purifier of the sinful ones (*patit-paavan*), as well.

Student: In knowledge as well as in *bhakti*. And it has also been said that those who have been far from the Father for many births call the Father again and again. Those who are close since many births remember nicely even if they see him once. What is the difference between both of them Baba?

बाबा – जो जन्म-जन्मांतर के नजदीक रहने वाले हैं। संगमयुग में आकरके वो पहली बार बाप से मिलते हैं। तो उनको एक बार का देखा हुआ पक्का याद आवेगा या नहीं आवेगा? भले दुबारा-तिबारा देखें या न देखें। याद आवेगा। और पूर्व जन्मों में जिन्होंने बहुत कम संग लिया है, दूर रहे हैं। लेकिन बाप को इस जन्म में आके देख लिया नजदीक आ गए। तो उनकी बुद्धि बाहर भागेगी या बाप में भागेगी? पूर्व जन्मों के अनुसार कोई वैष्या है। इस जन्म में आकरके ब्राह्मणी बन गई। तो ब्राह्मणी बनने के बावजूद भी वो माया बेटी की बुद्धि बाहर की दुनियाँ में रहेगी, बाहर की दुनियाँ में भागेगी या बाप के साथ रहेगी? बाहर की दुनियाँ वालों के साथ ज्यादा रहेगी। फिर भी आकरके वैष्या बन जावेगी।

Baba: When those who have been living close (to the father) since many births, come and meet the Father for the first time in the Confluence Age . Will they remember the Father certainly if they see him once or won't they? They may or may not see him for the second or third time, but they will remember him. And those who have kept his company to a very less extent, have been far from him in the past births, but they saw the Father in this birth, came close to him, so will their intellect run outside or will their intellect run towards the Father? Suppose someone was a prostitute in the past births and has become a Brahmani in this birth. So, in spite of becoming a Brahmani, will the intellect of that daughter maya remain in the outside world, will it run towards the outside world or will it remain with the Father? It will spend more time with the people of the outside world. Even so she will come and become a prostitute again.

जिज्ञासू – लेकिन जो जन्म-जन्मांतर दूर हैं। वो ही बार-बार बाप को बुलाते हैं, देखना चाहते हैं। संग का रंग लेना चाहते हैं।

बाबा – जन्म-जन्मांतर दूर रहे हैं वो देखना चाहते हैं?

जिज्ञासू – संग का रंग लेना चाहते हैं।

बाबा – अगर दूर रहें हैं लगातार तो उन्होंने बाप को बुलाया कहाँ? पूर्व जन्मों में भी तो बुलाया होता। पूर्व जन्मों में भी तो नजदीक पहुँचे होते। जिनको यहाँ बुलाने की बार-बार इच्छा होती है। तो इससे साबित क्या होता है? कि पूर्व जन्म में वो नजदीक रहे हैं। यहाँ संकल्पों का क्रम चलता है। और वहाँ स्थूल क्रम चलता है। यहाँ संकल्पों से जो नजदीक हैं। वहाँ स्थूल में भी वो नजदीक रहे होंगे।

जिज्ञासू – माना ये बोला है कि जो एन.एस में जो है अष्टदेव जो है।

Student: But only those who have been distant since many births call the Father again and again; they want to see him; they want to be coloured by his company.

Baba: Do those, who have been distant since many births wish to see (the Father)?

Student: They wish to be coloured by the company.

Baba: If they have been continuously far away, then did they call the Father? They could have called in the past births as well. They could have come close to him in the past births as well. Those who wish to call Him here again and again, so what does it prove? They have been close even in the past births. Here the cycle of thoughts goes on. And there the physical cycle goes on. Those who are close through the thoughts here might have lived close to him there in the physical form as well.

Student: It has been said that those who are in the NS , i.e. the eight deities.

बाबा – अरे! एन.एस में तो सब तरह के हैं। जो किसी घर का फाउन्डेशन डाला जाता है। तो फाउन्डेशन में नीचे पत्थर डाले जाते हैं। छोटे, बड़े, मजबूत, कच्चे, पक्के। तो जब दुरमुठ से कुटाई होती है धुनाई होती है तो कुछ इधर खिसक जाते हैं, कुछ इधर खिसक जाते हैं। कुछ गहराई में चले जाते हैं। कुछ इतने मजबूत होते हैं कि उपर ही बने रहते हैं, टूटते भी नहीं हैं। तो फाउन्डेशन में तो सब तरह के हैं। ऐसे नहीं कि उसमें राजायें ही हैं सब, नहीं। प्रजावर्ग के भी हैं। दास-दासी बनने वाले भी हैं। चाण्डाल बनने वाले भी हैं। वो तो फाउन्डेशन है।

Baba: Arey! All kind of souls are in the NS. When the foundation of a house is laid, the stones are put below the foundation. Small ones, big ones, strong ones, weak ones, firm ones. So, when they are pounded with a rammer, when they are beaten, some stones slip here and some there. Some go deep inside (the ground). Some are so strong that they remain on the surface. They do not even break. So, all kinds of souls are in the foundation. It is not as if everyone is a king there. No. They include the subjects as well. They include the *daas-daasis* (servants) as well as the *chaandaals* (cremators). That is a foundation.

जिज्ञासू – माना प्रश्न ये है कि जो एन.एस में जो है, वो बाप को बार-बार देखना नहीं चाहते या संग का रंग लेना नहीं चाहते और सदैव सेवा में भी लगे रहते हैं। बाबा – हाँ वो तो है। अगर किसी के बुद्धि में ये बैठ जाए सेवा से ही फायदा है। क्या? सेवा से फायदा है और कंधे पर चढ़े रहने में फायदा नहीं है। तो अच्छी बात है या खराब बात है? अच्छी बात है। अरे! दुनियाँ में भी कहते हैं कि माँ-बाप को काम प्यार है या चाम प्यारा है? चाम माना चमड़ी। कोई बच्चा देखने में बहुत खबसूरत हो, सुन्दर हो। और काम कुछ न करे, घर में ही पड़ा रहे, और ही तंग दुखी परेषान करता रहे। वो ज्यादा प्यारा लगेगा या कुरूप पैदा हुआ है और सारा दिन दुकान सम्भालता है और अच्छे तरीके से सम्भालता है। वो ज्यादा प्यारा लगेगा? ऐसे ही यहाँ भी है। बाप को सर्विसएबुल बच्चे प्यारे हैं।

Student: I mean to ask whether those who are living in the NS don't want to see the Father again and again or do not wish to be coloured by His company and always remain busy in service .

Baba: Yes that is correct. If it fits into anybody's intellect that service alone causes benefit. What? The service leads to benefit and there is no benefit in climbing on the shoulders (of the Father). So, is it good or bad? It is good. Arey! Even in the world it is asked whether the parents like the work (*kaam*) or the skin (*chaam*)? *Chaam* means *chamdi* (skin). If a child is very beautiful, handsome and does not do any work, keeps sitting at home and keeps causing sorrows and troubles. Will he be liked (by the parents) more or will someone who is born ugly, but looks after the (Father's) shop and takes care of it very nicely be liked more? It is a similar case here. The Father likes the serviceable children.

जिज्ञासू – माना सर्विसएबुल बच्चे बाप को बार-बार देखना नहीं चाहते क्या? संग का रंग नहीं लेना चाहते क्या?

बाबा – सर्विसएबुल बच्चे तो अव्यक्त स्टेज में स्थित हो जाएंगे जल्दी। बाप उनको याद करे बच्चे याद करे या ना करे वो तो हमेशा सामने ही रहेगा। जिसका काम करेंगे वो सामने नहीं रहेगा? रहेगा। और असली पूछा जाए तो मिनीमधुबन में सब जितने भी हैं चाहे सरेन्डर हो चाहे नान सरेन्डर। वो बार-बार उनकी इच्छा होती है बाबा को देखें, बाबा की मुरली सुनें बाबा के नजदीक रहें। क्या? बाबा से दृष्टि लें। इच्छा होती है कि नहीं? होती है। लेकिन उनको ये कोई बात नहीं है, कभी वो ये उल्लेहना नहीं

देते हैं कि हमको दृष्टि क्यों नहीं आकरके देते? सबको दृष्टि देते हैं। हमको डाईरेक्ट मुरली आकर क्यों नहीं सुनाते सबको सुनाते? हमारे नजदीक आकरके क्यों नहीं रहते ज्यादा दिन? और मिनीमधुबनों में क्यों चक्कर काटते रहते हैं। तो इसे अपूर्ण स्टेज की ओर कहें या सम्पन्नता के स्टेज के नजदीक कहें?

जिज्ञासू – बाबा ने बताया है ना बाबा की दृष्टि से विकर्म विनाश नहीं होते।

बाबा– अंदर की दृष्टि से हमेशा याद रहे वो ज्यादा अच्छा या इन आँखों से दृष्टि लेता रहे वो अच्छा?

Student: Does it mean that the serviceable children do not wish to see the Father again and again? Don't they wish to be coloured by His company?

Baba: The serviceable children become constant in the avyakta stage very soon. When the Father remembers them, whether the child remembers the Father or not, he will always be in front of him. Will the one whose work they are doing not be in front of them? He will be. And if it is asked, do all those who are living at the Minimadhubans, whether they are surrendered or non-surrendered, feel like seeing Baba again and again, listening to Baba's murli and to live close to him? What? (Do they think that) They should obtain Baba's drishti. Do they wish or not? They do. But they are not affected by these things, they do not complain why does He not come and give us *drishti*. He gives *drishti* to everyone. Why does He not come and narrate direct Murli to us when he is narrating to everyone. Why does he not come and live close to us for many days and why does He go on touring the Minimadhubans? So, will it be called an incomplete stage or a stage close to perfection?

Student: Baba has said that sins are not burnt by Baba's drishti.

Baba: Is it better if someone is always remembered through the internal *drishti* (of the Father) or is it better if he keeps obtaining *drishti* through these eyes? (concluded)

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.